जीवन विज्ञान : जीने की कला सिखाने वाला विज्ञान

समण सिद्धप्रज्ञ

संस्कार कहीं बाजार में नही मिलते, वे तो हर व्यक्ति के भीतर विद्यमान है। यदि आदमी को उपयुक्त अवसर, साधन और प्रेरणा मिल जाए तो नैतिक संस्कार स्वत: पल्लवित होने लगेंगे। नैतिक मूल्यों के विकास के लिए समाज व्यवस्था में परिवर्तन जितना आवश्यक है उससे अधिक व्यक्ति की आन्तरिक व्यवस्था में परिवर्तन जरूरी है। जीवन विज्ञान आन्तरिक परिवर्तन एवं स्वस्थ समाज की संरचना का संकल्प हैं। जीवन विज्ञान के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का मानना है कि शिक्षा पद्धति गलत नहीं है तो सही भी नहीं है यह अधूरी है, अपर्याप्त तथा असंतुलित है। शिक्षा के चार आयाम थे-शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक। वर्तमान शिक्षा पद्धति इस दृष्टि से अधूरी है कि उसमें शरीर एवं बुद्धि के लिए तो पर्याप्त स्थान है किन्तु मन एवं भावों के विकास के लिए स्थान पर्याप्त नहीं है। शिक्षा से चरित्र, नैतिकता, ईमानदारी, अनुशासन, सहिष्णुता, एकाग्रता, राष्ट्रीयता का विकास होना चाहिए किन्तु ऐसा नहीं हो रहा है इसका कारण है कि जितना ध्यान भूगोल एवं इतिहास पर दिया जा रहा है उतना ध्यान चरित्र एवं अनुशासन पर नहीं दिया जा रहा है।

आचार्यश्री तुलसी कहते थे कि शिक्षा हो और समाधान न हो तो वह शिक्षा अधूरी है। जो शिक्षा समस्याओं का समाधान करती थी वह आज स्वयं समस्या बनती जा रही है। इसके लिए समाज व्यवस्था के साथ हृदय परिवर्तन, भाव परिवर्तन भी जरूरी है।

सन् 1980 में आचार्यश्री तुलसी की सन्निधि में जीवन विज्ञान शिक्षा पद्धति का आविर्भाव हुआ।

जीवन विज्ञान क्या ? (What is Science of Living)

1. जीवन जीने की कला
2. शिक्षा का एक नया आयाम
3. प्रायोगिक शिक्षा पद्धति
4. मस्तिष्क प्रशिक्षण की पद्धति
5. सर्वांगीण स्वास्थ्य की विधि
6. व्यक्तित्व विकास का सोपान
7. सीखने एवं सिखाने में सरल
8. स्वभाव एवं व्यवहार परिष्कार
9. धर्म एवं सम्प्रदाय से रहित
10. अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय
11. स्वस्थ समाज रचना का संकल्प
12. मूल्य परक शिक्षा का प्रयोग

जीवन विज्ञान का उद्देश्य (Aim of Jivan Vigyan) :

1. संवेगो पर नियंत्रण

2. स्वभाव परिर्वतन

3. व्यवहार एवं आदतों में परिष्कार

4. आस्था का जागरण

5. सम्यक् जीवन जीने का प्रशिक्षण

6. व्यसन मुक्त जीवन का निर्माण

7. अहिंसक व्यक्तित्त्व का निर्माण

8. बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास का संतुलन

9. संवेग और विवेक में सामंजस्य

10. सामाजिकता और वैयक्तिकता में सामंजस्य

11. मानवीय संबंधों में सुधार

12. आत्मानुशासन की क्षमता का जागरण

13. स्वयं की शक्तियों से साक्षात्का

जीवन विज्ञान के आधार भूत तत्त्व:

1. शरीर (Body)	2. श्वास (Breathing)
3. प्राण (Vital Energy)	4. मन (Mind)
5. भाव (Emotion)	6. लेश्या (कर्म संस्कार) (Colour)
7. चित्त (Psychic)	

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि जीवन विज्ञान-योग शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा एवं मूल्यपरक शिक्षा का समन्वित पाठ्यक्रम है।

जीवन विज्ञान के प्रयोग अंग (Practical Dimensions of SOL) :

1. कायोत्सर्ग	– तनाव मुक्ति के लिए
2. महाप्राण ध्वनि	– वातावरण शुद्धि के लिए
3. दीर्घ श्वास प्रेक्षा	– स्वस्थ जीवन के लिए
4. शरीर प्रेक्षा	– समन्वय के लिए
5. चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा	– चित शुद्धि के लिए
6. लेश्या ध्यान	– भाव विशुद्धि के लिए
7. अनुप्रेक्षा	– आदतों में परिष्कार के लिए
8. योगासन मुद्रा	– शारीरिक स्वास्थ्य एवं रोग निवारण हेतु

जीवन विज्ञान की निष्पत्ति (Result of SOL) :

1. प्राणधारा एवं मस्तिष्क का संतुलन

2. भावनात्मक नियंत्रण-संवेग, क्रोध आदि का उपशम

3. मनोबल का विकास-एकाग्रता एवं स्मृति में वृद्धि

4. मूल्यों का बोध एवं विकास

5. सर्वांगीण स्वास्थ्य की प्राप्ति-रोगों का निवारण

6. कार्य क्षमताओं का विकास

7. आदतों में रूपान्तरण

शिक्षा में जीवन विज्ञान (SOL in Education) :

जीवन विज्ञान में प्राचीन अध्यात्म एवं आधुनिक विज्ञान का योग है। जीवन विज्ञान स्वास्थ्य शिक्षा, नैतिक शिक्षा, योग शिक्षा एवं मूल्य परक शिक्षा का समन्वित पाठ्यक्रम है।

जीवन विज्ञान का कक्षा एक से एम. ए. एवं एम. एस. सी. का विधिवत सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक पाठ्यक्रम बनाया गया है। यू. जी. सी. द्वारा मान्यता प्राप्त जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, लाडनूं में एम. ए. स्तर पर अध्ययन एवं शोध कार्य करवाया जाता है। गत तीन वर्षों से संस्थान द्वारा जीवन विज्ञान का स्नातकोत्तर स्तर पर पत्राचार से अध्ययन कराया जा रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर द्वारा स्नातक स्तर पर जीवन विज्ञान का पाठ्यक्रम सम्मिलित किया गया। मा. शि. बोर्ड, राजस्थान ने कक्षा 9 एवं 10 के पाठ्यक्रम में इसे शामिल किया। मध्यप्रदेश में जिला स्तर पर अनेक जिलों में कक्षा 3 से 10 तक इसे पाठ्यक्रम में एवं प्रार्थना सभा में सम्मिलित किया गया।

छत्तीसगढ़, बिहार, गुजरात, दिल्ली, मुम्बई, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पांडिचरी, कर्नाटक के स्कूलों में प्रार्थना सभा में इसे सम्मिलित किया गया।

भारत में 430 केन्द्रीय विद्यालयों में इसे शामिल किया गया। इसके अतिरिक्त सैंकड़ों प्राइवेट स्कूलों में इसे पढ़ाया जा रहा है। अध्यात्म साधना केन्द्र, तुलसी अध्यात्म नीडम्, एन.सी.ई.आर.टी. आदि शोध संस्थाएं इस पर शोध कर रही है।

पूरे भारत में किए गए प्रयोगों एवं शोधकार्य से ज्ञात हुआ कि इसके प्रयोगों से विद्यार्थी, छात्र एवं अभिभावकों में अच्छा सकारात्मक परिवर्तन आया है। बोकारो स्टील प्लांट के 65 स्कूलों में इसे अनिवार्य विषय के रुप में सम्मिलित किया गया।

तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनूं एवं अध्यात्म साधना केन्द्र महरौली, नई दिल्ली जीवन विज्ञान के प्रशिक्षण का मुख्य केन्द्र है। जहां जीवन विज्ञान योग के मास्टर ट्रेनर तैयार किए जा रहे हैं। इच्छुक भाई-बहिन एवं शिक्षा प्रेमी इन संस्थानों से सम्पर्क करें।

विशेष-जीवन विज्ञान के कार्य को गति देने हेतु देशभर में अनेक स्थलों पर जीवन विज्ञान अकादमी का गठन किया गया है।

II Jai Bhikshu II

II Jai Mahashraman II

With Best Wishes From

Vimal Kataria (MD)
Madhu Kataria

दर्पण जैसा पारदर्शी हो, निर्मल जीवन-उच्च आचरण
संघ-संगठन हित सिद्धि में, बढ़ चले अविराम चरण
आम बूंदों के अभिचिंतन से, महकाये हम गण का उपवन
श्रद्धा-निष्ठा बहे नस-नस में, संघ के प्रति हो पूर्ण समर्पण

VAISHNODEVI
LUSH GREENS

BUILDERS | DEVELOPERS | PROMOTERS

Regd. Office
Vaishnodevi Lush Greens Pvt. Ltd.
#459, 4th Floor, 12th Main
M. C. Layout, Near Vijayanagar Post Office
Vijayanagar
BANGALORE-560040 (Karnataka)
Ph.: 23146429, M.: 9620799999, e-mail: vimalkataria9@gmail.com

Rekha Jewellers
#1025, 8th Cross, K. R. H. Road
Sai Complex, Ashoka Road, Mysore

Shailbhadra Jewellers
#1328, 7th West Cross
Ashoka Road, Mysore

Manoharlal, Praveenkumar, Janak, Yogesh
Vimal, Vikas, Vishal, Vinay, Gourav
Chirag, Manav, Yash Kataria
(Bemali)

KATARIA
INFFRA

शिक्षा के बोझ तले निकली ये आवाजें...

मैकाले का भूत आज सबसे अधिक प्रसन्न

1858 में Indian Education Act बनाया गया। आज हमारी शिक्षा व्यवस्था इसी कानून पर आधारित है। यह मैकाले नाम के अंग्रेज ने बनाई थी हमें गुलाम बनाने के लिए और संस्कृति को नष्ट करने के लिए। मैकाले का स्पष्ट कहना था कि भारत को हमेशा-हमेशा के लिए अगर गुलाम बनाना है तो भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शिक्षा व्यवस्था को पूरी तरह से ध्वस्त करना होगा और उसकी जगह अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था लानी होगी तभी इस देश में शरीर से भारतीय लेकिन दिमाग से अंग्रेज पैदा होंगे। जब वे इस देश की यूनिवर्सिटी से निकलेंगे तो हमारे हित में काम करेंगे।

मैकाले का भूत आज सबसे अधिक प्रसन्न होगा। यह देखकर कि इतने साल पहले की गई उसकी भविष्यवाणी सही साबित हुई। मुहावरा इस्तेमाल करती हूं- 'जैसे किसी खेत में कोई फसल लगाने के पहले पूरी तरह जोत दिया जाता, वैसे ही इसे जोतना होगा और अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था लानी होगी' इसलिए उसने सबसे पहले गुरुकुलों को गैरकानूनी घोषित किया। जब गुरुकुल गैरकानूनी हो गए तो उनको मिलने वाली सहायता जो समाज की तरफ से होती थी, वह गैरकानूनी हो गयी फिर संस्कृत को गैरकानूनी घोषित किया। अंग्रेजी शिक्षा को कानूनी घोषित किया गया और कोलकाता में पहला कांवेंट स्कूल खोला गया।

उस समय इसे 'फ्री' स्कूल कहा जाता था। इसी कानून की तरह भारत में कलकत्ता यूनिवर्सिटी बनाई गई, बम्बई यूनिवर्सिटी बनाई गयी, मद्रास यूनिवर्सिटी बनाई गई और ये तीनों गुलामी के जमाने की यूनिवर्सिटी आज भी इस देश में कार्यरत हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था भी मैकाले का वही Indian Education Act है अर्थात् आज भी हमारे भारत में वही शिक्षा व्यवस्था चल रही है जो मैकाले ने हमें गुलाम बनने के लिए बनाई थी।

आज यही कारण है कि अपनी महान संस्कृति को हम स्वयं ही शिक्षा के नाम पर नष्ट करने में व्यस्त हो रहे हैं। सचाई यही है कि हमारा अध्यात्म, हमारी संस्कृति आज के विज्ञान से अत्यधिक उच्च और संपन्न है। आवश्यकता है तो उसे अपनाने की और मैकाले के षड़यंत्र को विफल करने की। यह तब ही संभव है जब हम अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को निकालकर अपनी शिक्षा पद्धति का अवलंब करें।

प्राजक्ता प्रकाश, के. रा. कोतकर माध्यमिक विद्यालय, महाराष्ट्र

शिक्षा के साथ जीवन मूल्य सिखाएं

शिक्षा का मूल उद्देश्य है-मनुष्य को उसकी बाहरी और आंतरिक आवश्यकताओं से परिचित कर उनको पूरा करने की कला प्रदान करना। शिक्षा जीवन की भौतिक जरुरतें जैसे तो पूरी करती है परंतु नैतिक व आत्मिक विकास की कला नहीं सीखाती। दुर्भाग्य से शिक्षा को एकांगी बना दिया गया है। इसको केवल जीविकोपार्जन एवं व्यवसाय प्राप्त करने का एकमात्र जरिया बना दिया गया है। इसी कारण शिक्षा के व्यवसायीकरण का दौर प्रारंभ हुआ।

व्यावसायिक शिक्षा अपने व्यवसाय में नि:संदेह काफी आगे बढ़ी है परंतु इसका दूसरा एवं अन्य पहलू उतना ही निराशाजनक एवं चुनौतीपूर्ण है। जो प्रतिभाशाली छात्र उच्च शिक्षण संस्थाओं से निकल रहे हैं, यदि इनके जीवन मूल्यों, समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व के प्रति दृष्टिकोण का पता लगाया जाए तो निराशा ही हाथ लगेगी। इन छात्रों का स्वयं के विचार, भाव एवं आंतरिक क्षमताओं के प्रति समझ और उसका नियोजन नहीं के बराबर है। शिक्षा के रूप में उनको जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, वह केवल जानकारी इकट्ठी करता है और यह बौद्धिक समझ तक सीमित है। वस्तुत: यथार्थ ज्ञान है-अनुभूति।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में जो ज्ञान परोसा जाता है, वह तो केवल बौद्धिक धरातल तक सीमित है, इससे हमारे अंदर दबी-पड़ी सुप्त क्षमताओं का जागरण संभव नहीं है। वह तो हमें केवल जीविकोपार्जन तक सीमित रखता है। शिक्षा का अन्य रूप जिसे विद्या कहते हैं, यही सच्चा ज्ञान है जो कहीं बाहर से नहीं आता, यह भीतर से जागता है। इसे स्कूल या कॉलेज के पाठ्यक्रम से सीखना नहीं बल्कि स्वयं के अंदर से उघाड़ना होता है। सीखा हुआ ज्ञान जानकारी है, जबकी उघाड़ा हुआ ज्ञान अनुभूति है। जिस ज्ञान को सीखा जाए, उसके अनुसार जीवन को जबरदस्ती ढ़ालना पड़ता है फिर भी वह कभी संपूर्णतया स्वयं के अनुकूल नहीं बन पाता।

एकता मल्होत्रा, भारत नेशनल पब्लिक स्कूल, दिल्ली

शिक्षा की आवश्यकताएं

शिक्षा की कई जरूरी आवश्यकताएं हैं, जैसे–

- सामाजिक आवश्यकताएं।
- विकास की आवश्यकता।
- शारीरिक आवश्यकता।
- सम्मान हेतु आवश्यकता।
- सुरक्षात्मक आवश्यकता।
- आध्यात्मिक आवश्यकता।

शिक्षा की आवश्यकता काफी विस्तृत है। इसे हम किसी एक जगह या विषय के साथ बांध नहीं सकते। मानव के विकास की प्रथम सीढ़ी है शिक्षा। इसके बिना एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व की कल्पना करना असंभव है। यह मानव के सम्मान के विषय के साथ–साथ उसके विकास की बात भी करती है।

शिक्षा का लक्ष्य–शिक्षा का मुख्य लक्ष्य युवापीढ़ी का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास करना होता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के भीतर विद्यमान गुणों को विकसित करना होता है और उसे पूर्णता प्रदान करना होता है। शिक्षा के माध्यम से भौतिक जीवन व आध्यात्मिक जीवन के बीच के अंतर को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा के माध्यम से इस तरह युवापीढ़ी को आध्यात्मिक, नैतिक मूल्यों एवं आत्मिक ज्ञान से परिपूर्ण किया जाता है ताकि युवापीढ़ी का सर्वांगीण विकास हो सके।

गौरव फारसी, रेनबो पब्लिक स्कूल, टिहरी गढ़वाल

खटास में न बदल जाए कहीं शिक्षा की मिठास

किसी न किसी वजह से भारतीय विद्यालय अपेक्षित प्रगति नहीं कर पा रहे हैं। मेरे अनुमान से कुछ कारण हैं–

- विद्यालयों में केवल लिखने का काम किया जाता है। अभ्यासिक कोई कार्य नहीं करवाया जाता है।
- अच्छे अध्यापकों की कमी है।
- व्यक्तित्व विकास नहीं होता है।
- माता–पिता बच्चों के शो को समझ नहीं पाते हैं।
- यदि कोई बच्चा अपनी उच्च शिक्षा के लिए विज्ञान के अलावा कुछ और लेता तो अन्य माता–पिता और बच्चे उसकी काबिलियत पर सवाल करते हैं।
- अधिकतर विद्यालय आजकल व्यावसायिक रूप से कार्य कर रहे हैं।

ऐसा कहा जाता है कि 'शिक्षा की जड़ें कड़वी होती है लेकिन फल मीठे होते हैं' परन्तु कुछ कारणों से शिक्षा की मिठास कड़वे फलों में बदल गई है इसलिए शिक्षक विभिन्न ऐसे तरीके ढूंढ़ रहे हैं जिनसे वह बढ़ती बदलाव की मांगों से इस शिक्षा पद्धति का मिलान कर सकें। उसके लिए हमें अभिमुख और भिन्न दोनों प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है तभी हम इन मुश्किल पड़ावों को पार कर पाएंगे।

सुश्मिता नंदी, बाल भवन पब्लिक स्कूल, दिल्ली

जीवन विज्ञान का उद्देश्य है-जीवन के नियमों की खोज।
उन नियमों की खोज,
जिनके द्वारा दृष्टिकोण का
परिष्कार किया जा सकता है,
व्यवहार और आचरण
का रूपांतरण किया जा सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

श्री प्रकाशचन्द
मुकेशकुमार मूथा

चेन्नई

जीवन के तीन मुख्य पक्ष हैं-
ज्ञानात्मक पक्ष, भावनात्मक पक्ष और क्रियात्मक पक्ष।
हम जानते हैं, यह हमारा ज्ञानात्मक पक्ष है।
हम अच्छे, बुरे भावों से जुड़े हुए हैं,
यह हमारा भावनात्मक पक्ष है।
हम आचरण करते हैं, यह हमारा क्रियात्मक पक्ष है।
जीवन विज्ञान का प्रयत्न है कि ये तीनों पक्ष परिष्कृत हों।

आचार्य महाप्रज्ञ

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

श्री तनसुखलाल, दिलीप, मनोज, अमित नाहर

दिवेर-चेन्नई

* हमारे सामने दो विकल्प हैं-
  1. स्वच्छंदता।
  2. अनुशासन।
* स्वच्छंदता परतंत्रता की प्रतिक्रिया है जो आत्मीय भाव के विकास में बाधक बनती है।
* स्वच्छंदता और अनुशासन के बीच में है स्वतंत्रता, जो बहुत अपेक्षित है। हमें वास्तविक स्वतंत्रता को प्राप्त करना है, न कि कृत्रिम स्वतंत्रता को। व्यक्ति स्वयं अपने पर अनुशासन रखे। वह अपने विवेक को जागृत करे, आत्म-विवेक की दिशा को प्राप्त करे, कर्तव्य और दायित्व का निर्वाह करे।

आचार्य महाप्रज्ञ

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

मोनिका प्रिन्टर्स प्रा. लि.

गंगापुर-उधना, सूरत

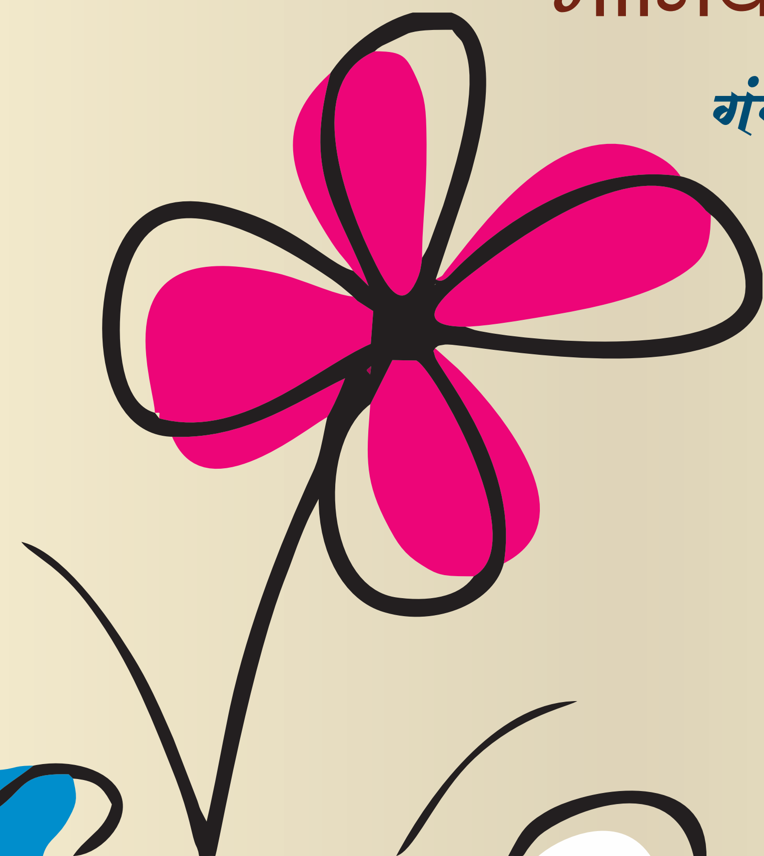

- विद्यार्थी के मस्तिष्क का परिष्कार करना, यह शिक्षा-प्रणाली का एक महत्त्वपूर्ण कार्य होना चाहिए।
- जीवन विज्ञान का अर्थ है परिष्कार करना।
- जीवन विज्ञान की प्रणाली इन चार पहलुओं के आधार पर प्रस्तुत की गई है-
  1. प्राणधारा का संतुलन।
  2. जैविक संतुलन की स्थापना।
  3. क्षमता की आस्था का जागरण।
  4. परिष्कार।
- इसका प्रतिफलन चार आयामों में होगा-
  1. शारीरिक विकास।
  2. बौद्धिक विकास।
  3. मानसिक विकास।
  4. भावनात्मक विकास।

आचार्य महाप्रज्ञ

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

श्री विमलकुमार, प्रतीकुमार भंसाली

छापर-बेंगलोर

जरा हमारी भी सुनिए...

खत्म हो शिक्षा में भेदभाव की प्रणाली

वर्तमान शिक्षा प्रणाली बच्चों में भेदभाव उत्पन्न कर रही है। यह भेदभाव अमीरी–गरीबी का है। गैर सरकारी विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जा रही है। कई क्रियाकलापों की भी शिक्षा दी जा रही है जिसके बदले में अभिभावकों से मोटी फीस वसूली जा रही है। समाज का एक तबका अपने बच्चों के अच्छे भविष्य के लिए इनकी मनमानी सह रहा है।

शिक्षा का स्तर सामान्य होना चाहिए जिससे बच्चों में भेदभाव उत्पन्न न हो। आज के बच्चे हिंसक प्रवृत्ति के हो गए हैं। पढ़ाई का बोझ इतना हो गया है कि उन्हें खेलने–कूदने का समय नहीं मिल पा रहा है जिससे उनका पूर्ण विकास नहीं हो पा रहा है। विद्यालयों में समय–समय पर खेल–कूद, पठन–पाठन, नृत्य–संगीत, चित्रकला, वाद–विवाद, लेखन आदि की प्रतियोगिताओं का आयोजन होते रहना चाहिए जिससे बच्चों की प्रतिभा का बहुमुखी विकास हो।

हर्शिता प्रसाद, जिनवाणी भारती पब्लिक स्कूल, दिल्ली

बिना आचरण शिक्षा अधूरी

शिक्षा और आचरण अन्योन्याश्रित हैं। बिना आचरण के शिक्षा अधूरी है और बिना शिक्षा के आचरण और अंततोगत्वा ये दोनों भी अनुशासन के ही भिन्न रूप हैं। शिक्षा ग्रहण करने के लिए कठोर अनुशासन की आवश्यकता है। अनुशासन भाषण से नहीं, आचरण से आता है। 'लक्ष्य' अनुशासन का सबसे बड़ा प्रेरक है। यदि शिक्षा प्राप्त करने के लिए किसी ऊंचे लक्ष्य को अपने में ठान लें तो अनुशासन दास बनकर उसका अनुगमन करेगा।

शिक्षा मनुष्य को मस्तिष्क तथा शरीर का उचित प्रयोग करना सिखलाती है। वह शिक्षा जो मनुष्य को पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कुछ गंभीर चिंतन न दे, व्यर्थ है। संसार का समस्त वैभव तथा सुख–साधन भी मनुष्य को तब तक सुखी नहीं बना सकते जब तक मनुष्य को आत्मिक ज्ञान ना हो।

शिवानी शर्मा, नवहिन्द गर्ल्स सी. सै. स्कूल, दिल्ली

प्रतिस्पर्धा वाली डिग्रियां हों खत्म

सर्वप्रथम के.जी. से लेकर पी.जी. तक नैतिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जानी चाहिए। हर छात्र के लिए एन. सी.सी. का कैडेट होना जरूरी हो। प्रत्येक शिक्षक और विद्यार्थी को प्राच्य देव वाणी संस्कृत तथा हिन्दी का प्राथमिक ज्ञान होना चाहिए। प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तनख्वाह विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों से कम नहीं होनी चाहिए। विद्यालयों के नामकरण जाति, मजहब पर आधारित नहीं होने चाहिए। नामकरण में राष्ट्रीयता, उदारता और वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव होने चाहिए। जैसे भारत विश्वविद्यालय, ऋषभदेव महाविद्यालय आदि।

प्रतिस्पर्धा वाली डिग्रियों को समाप्त करना चाहिए। ये परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, षड्यंत्रों को बढ़ावा देती है। इसकी जगह सद्गुण और विषय की गुणवत्ता को समझने वाले विद्यार्थियों का चयन उनकी व्यावहारिक कुशलता के आधार पर होना चाहिए। इसका आकलन करने के लिए विशेष विशेषज्ञों की टीम निष्पक्षता के मापदंड से मनोनीत होनी चाहिए। प्राथमिक स्तर से विद्यार्थी की अभिरूचि को समझने के लिए अत्यंत गंभीर और जिम्मेदार शिक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए। फिर विद्यार्थी की अभिरूचि के अनुरूप ही उन्हें चित्रकार, संगीतकार, खिलाड़ी, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, नेतृत्वकर्ता, लेखक, कवि, धर्मवेत्ता, सैनिक, प्रशासनिक सेवक आदि बनने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

विद्यार्थी की ईमानदारी के अनवरत टेस्ट होते रहने चाहिए। इसके लिए किसी परीक्षा की नहीं बल्कि छात्रों के आचरणों पर बल देने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों, शिक्षकों का गणवेष शालीन होना चाहिए। हर रोज कक्षा की शुरुआत किसी महापुरुष के प्रेरक प्रसंग से होनी चाहिए।

वागीशा शर्मा, सिका स्कूल, इंदौर

सभी को है पढ़ने का अधिकार

हमें वर्तमान शिक्षा को और उपयोगी बनाने में हाथ बंटाना चाहिए। यह हम अकेले नहीं कर सकते। हमें इस कार्य को अपने समाज से मिलकर करना होगा। शिक्षा के प्रति नागरिकों में जागरुकता भरनी होगी। हमें राष्ट्र को आगे बढ़ाना है तो हमें पूरे राष्ट्र को शिक्षित करना होगा। शिक्षा के बिना किसी के जीवन का उद्धार नहीं हो सकता।

इस जीवन में सभी नागरिकों को पढ़ने का अधिकार है फिर भी हम लोग यह क्यों नहीं समझ पाते कि पढ़ाई करने से हमारे जीवन में खुशियां ही खुशियां आती हैं। पढ़ाई ही वह कड़ी है जिसके माध्यम से हमारे देश की गरीबी दूर हो सकती है। जीवन में सभी क्षेत्रों का विकास पाने के लिए शिक्षा अति आवश्यक है। शिक्षा को अगर आगे बढ़ाएंगे तभी हमारे देश से गरीबी, भ्रष्टाचार, अमीरों एवं गरीबों के बीच भेदभाव दूर हो सकता है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने नौकरों पर अत्याचार करते हैं और नौकर शिक्षित न होने के कारण कुछ नहीं कर पाते हैं और पीड़ा को सहने करते रहते हैं। यही कारण है कि अगर नौकर शिक्षित होता है तो उसे अच्छी नौकरी भी मिल सकती थी। शिक्षा हमारे जीवन की कई मुश्किलों को आसान बना देती है।

राहुल कुमार, आदर्श हिन्दी विद्यालय, कोलकाता

मातृभाषा बने शिक्षा का माध्यम

अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी, फ्रेंच आदि अन्य भाषाओं के साथ-साथ मातृभाषा भी शिक्षा का माध्यम होनी चाहिए। हालांकि अन्य भाषाओं के ज्ञान से हमें दूसरे लोगों के विचारों, उनके साहित्य आदि की जानकारी मिलती है तथा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं के द्वारा छात्रों को दूर-दूर तक अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है। अन्य भाषाओं के साथ-साथ यदि छात्र अपनी मातृभाषा में भी शिक्षा प्राप्त करते हैं तो वह अपने विचारों को दूसरों तक अधिक प्रभावी ढ़ंग से पहुंचा सकते हैं क्योंकि मनुष्य का स्वभाव है कि वह मातृभाषा में ही सोचता है और अपनी बात को उसी भाषा में दूसरों तक ज्यादा प्रभावी तरीके से पहुंचा सकता है।

पाठ्यक्रम में व्यक्तिगत चरित्र निर्माण, सदाचार एवं अनुशासन संबंधी बातों को सम्मिलित किया जाना चाहिए क्योंकि आजकल विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। विद्यार्थी उदंड होते जा रहे हैं। शिक्षकों से अभद्र व्यवहार करना, बड़ों से ऊंचे स्वर में बात करना, झूठ बोलना, लड़ाई-झगड़ा करना आदि बातें आम हो गई हैं। अत: पाठ्यक्रम में नैतिकता बढ़ाने व अनुशासन का महत्व छात्रों को समझाने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

मनस्वी गौड़, विकास भारती पब्लिक स्कूल, दिल्ली

व्यावहारिक बनाई जाए शिक्षा पद्धति

मनुष्य जीवन की सबसे अधिक मधुर और सुनहरी अवस्था विद्यार्थी जीवन ही होता है। विद्यार्थी जीवन ही सारे जीवन की नींव माना जाता है। एक चतुर कारीगर बहुत ही सावधान और प्रयत्नशील रहता है कि वह जिस मकान का निर्माण कर रहा है कहीं उसकी नींव कमजोर न रह जाए। यदि नींव मजबूत होगी तभी मकान धूप-छांव, आंधी-पानी और भूकंप के वेग को सह सकता है। इसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति अपने जीवन की नींव को सुदृढ़ बनाने के लिए सावधानी से यत्न करता है।

भली प्रकार विद्या ग्रहण करना विद्यार्थी का प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए। विद्यार्थी का कर्तव्य होना चाहिए कि वह अपने शरीर, बुद्धि, मस्तिष्क, मन और आत्मा के विकास के लिए पूरा-पूरा यत्न करे। अनुशासनप्रियता, नियमितता, समय पर काम करना, उदारता, दूसरों की सहायता करना, सच्ची मित्रता, पुरुषार्थ, सत्यवादिता, नीतिज्ञता, देशभक्ति, विनोद प्रियता आदि गुणों से विद्यार्थी जीवन सोने के समान निखर उठता है।

जिस प्रकार हम उन्नति की ओर बढ़ रहे हैं, हमारी शिक्षा में भी नित नए परिवर्तन आते जा रहे हैं। आज की शिक्षा पद्धति में प्राचीनकाल वाली शिक्षा पद्धति वाली बात नहीं रही। आज शिक्षा धन कमाने का ही साधन बन कर रह गई है। यह बात सही है कि हमें आधुनिक शिक्षा पद्धति में नए-नए परिवर्तन अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को भूलना नहीं चाहिए।

मिहिर खुराना, हिलवुड्स अकादमी, दिल्ली

शिक्षा से छू सकते हैं सितारे

जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति को और उपयोगी बनाने के लिए हमें खूब परिश्रम करना होगा। उदाहरण के लिए जैसे एक बार एक शक्तिशाली राजा घने जंगल में शिकार खेल रहा था। अचानक आकाश में काले बादल छा गए और मूसलाधार वर्षा होने लगी। अंधकार में राजा अपनी राह भूल गया और सिपाहियों से भी अलग हो गया।

सूर्य अस्त हो गया था लेकिन अकेला राजा राजमहल तक नहीं पहुंच सका। वह भूख-प्यास और थकावट से व्याकुल हो गया। राजा जंगल के किनारे एक टीले पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसने कुछ बच्चों को बाग की ओर जाते हुए देखा, कहा-'सुनो बच्चों, जरा यहां आओ।' जब बच्चे पहुंचे तो राजा ने उनसे पूछा-'थोड़ा भोजन और जल मिलेगा। मैं बहुत भूखा-प्यासा हूं।'

नन्हें बच्चों ने उत्तर दिया-'अवश्य। हम घर जाकर अभी सब कुछ ले आते हैं।' वे गांव की ओर भागे और तुरंत जल और भोजन ले आए। राजा बच्चों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। वह बोला-'प्यारे बच्चों! अब मुझे बताओ कि तुम जीवन में क्या करना चाहते हो। मैं तुम सभी की मदद करना चाहता हूं।'

कुछ देर सोचने के बाद एक बालक बोला-मुझे धन चाहिए। राजा मुस्करा कर बोला-'ठीक है, मैं तुम्हें इतना धन दूंगा कि तुम जीवनभर सुखी रहोगे। उस बालक ने कहा कि मैंने तो कभी दो समय की रोटी नहीं खाई है। कभी सुंदर कपड़े नहीं पहने हैं। अब मैं यह सब कुछ कर सकता हूं।'

दूसरे बालक ने बड़े उत्साह से पूछा-'हे राजन! क्या आप मुझे घोड़ागाड़ी देंगे?' वह उत्तर की प्रतीक्षा में सांस रोके खड़ा था। 'अगर तुम्हें यही चाहिए तो तुम्हारी इच्छा भी पूरी हो जाएगी।' राजा ने कहा।

'धन्यवाद-धन्यवाद' लड़के ने कहा। उसकी आंखें चमकने लगीं। उसने कहा-'आज से मेरे घर में दीये जलेंगे।' तीसरे बालक ने कूदते हुए पूछा-'महाराज क्या आप मेरा सपना पूरा करेंगे?' राजा (हंसते हुए)-'क्यों नहीं।' 'महाराज! मुझे न धन चाहिए न बंगला, मुझे तो आप आशीर्वाद दीजिए जिससे मैं पढ़-लिखकर विद्वान बन सकूं। शिक्षा समाप्त होने पर मैं अपने देश की सेवा करना चाहता हूं।' लड़के ने कहा।

राजा तीसरे बच्चे की इच्छा सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने उसके लिए शिक्षा का प्रबंध किया। वह मेहनती बालक था इसलिए उसने दिन-रात एक कर दिया और प्रत्येक कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने लगा। वह विद्वान था। इसलिए राजा और नगरवासी उसका सम्मान करते थे। दुर्भाग्य से जिस बालक ने धन मांगा था, उसने बुद्धिमानी से काम न लिया, व्यापार में उसका सारा धन डूब गया। दूसरे बालक का बंगला और गाड़ी एक भूकंप में नष्ट-भ्रष्ट हो गए। दोनों उदास मित्र राजा के दरबार में अपने विद्वान मित्र से मिलने के लिए आए। हम दोनों ने राजा से पुरस्कार मांगने में भूल कर दी। तीसरे मित्र ने उन्हें समझाते हुए कहा-'धन सदा पास नहीं रहता है, ज्ञान मनुष्य की जिंदगीभर काम आता है और उसे कोई भी चुरा नहीं सकता।'

संदीप कौर, डी.ए.वी. पब्लिक सी.सै. स्कूल, पंजाब

जायदाद नीलाम कर पढ़ाया

आज हमारे स्कूल और कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र किस प्रकार इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। छह वर्ष के हुए तो मां-बाप ने पढ़ने को भेजा। दस वर्ष के हुए मेहनत करके परीक्षा पास की। चार वर्ष दिमाग खाली कर बी.ए. की डिग्री ले ली। डिग्री लेने पर भी वही सामने है-हमें रोटी कैसे मिलेगी? माता-पिता ने अपनी जायदाद नीलाम कर लड़के को पढ़ाया, हजारों रुपये खर्च हो गए। कर्ज पर कर्ज हो गए। जब पढ़-लिखकर बाहर निकला और माता-पिता की आशा हुई कि अब सारी दरिद्रता दूर तो जाएगी, उस समय नया दृश्य क्या? अब नौकरी की सिफारिश करने वाला चाहिए। कहीं सिफारिश लगे, किसी साहब के सामने जाकर गिड़गिड़ाया जाये, उसको गालियां दी जाएं, किसी गरीब की नौकरी हटवाकर अपना उल्लू सीधा किया जाए तब कहीं जाकर नौकरी लगे।

बी.ए. पढ़ने वाले का 'सब्ज बाग' देखा जाए। स्कूल और कॉलेजों की शिक्षा असल में शिक्षा नहीं है, यह केवल परीक्षा पास कराने की मशीन है। खूब रट-रट कर, घोटा लगाकर परीक्षा पास कर लेना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। प्रत्येक कॉलेज का अधिवक्ता परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाना-फीसदी अधिक लड़के पास करना ही अपना उद्देश्य समझता है। स्कूलों के अध्यापक निरीक्षकों को बड़े गौरव से कहते हैं-'बस मतलब पूरा हो गया शिक्षा की इतिश्री हो गई।' लड़कों की तंदुरुस्ती, उनका चरित्र बिगड़ जाए तो बिगड़ जाए पर पास होना चाहिए।

लड़के परीक्षा पास करना अपना मुख्य कर्तव्य समझ सब कुछ उसके लिए बलिदान कर देते हैं और परीक्षा पास कर लेने पर समझ बैठते हैं-बस, अब मैदान मार लिया। अब संसार के दु:खों से छूट गए। बेचारे यह नहीं जानते कि जीवन का सबसे अच्छा समय गुजर गया और अब मुसीबतों का आरंभ होने लगा है। मिल और स्पोन्सर के उपदेश तो उन्हें कंठस्थ हैं पर उनसे रोटी कमाने में कुछ भी सहायता नहीं मिल सकती।

पहले तो इस शिक्षा द्वारा शरीर खो दिया, तंदुरुस्ती नष्ट हुई, जो कुछ बचा उससे आर्थिक स्वतंत्रता लाभ पाने को सर्वथा असमर्थ हैं। चौदह वर्ष की शिक्षा नवयुवकों को इस योग्य नहीं बना सकती कि वे स्वतंत्रतापूर्वक जीवन निर्वाह कर सकें। घर की पूंजी से कॉलेज में समय नष्ट न किया जाता तो अच्छा रहता।

कोमल, भिवानी पब्लिक स्कूल, भिवानी

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

श्री सुखराज सेठिया

मोमासर-दिल्ली

शिक्षा जगत के लिए जरूरी है नया चिंतन

विजय दूगड़

'विद्या ददाति विनयम्' वैदिक काल से लेकर मध्ययुगीन शिक्षा व्यवस्था का यह मूलभूत सिद्धांत रहा है। नैतिकता और प्रामाणिकता, संस्कार और स्वभाव, विनय के आलोक में अपनी प्रभा और प्रभाव के द्वारा मानवीय चरित्र में एक चमत्कार का सृजन करते हैं जो कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व के बोध के साथ मानवीय मूल्यों को सुरक्षित एवं संरक्षित ही नहीं करते अपितु धर्म एवं संस्कृति का आधार भी बनते हैं।

अतीत दर्पण है। हमारे समस्त कार्यकलापों का प्रामाणिक दस्तावेज है। उत्कर्ष और अपकर्ष का लेखा-जोखा है। उपलब्धियों और वंचनाओं को विस्मृत न होने देने वाला स्मृति-कोष है। वर्तमान को समझने के लिए अपनी यात्रा अतीत से आरम्भ करते हैं।

वेद : वेद जो सर्व-शक्तिमान परमेश्वर है, उसी से (ऋचः) ऋग्वेद, (यजुः) यजुर्वेद, (सामाग्नि) सामवेद, (आङ्गिरस) अथर्ववेद ये चारों उत्पन्न हुए।

उपवेद :

आयुर्वेद : वैद्यक शास्त्र ,चरक, सुश्रुत, धन्वंतरि कृत निघण्टु आदि

धनुर्वेद : जिसमें शस्त्र-अस्त्र विद्या के विधानयुक्त अङ्गिरा आदि ऋषियों के बनाए हुए ग्रन्थ।

गांधर्ववेद : सामगान और नारद संहिता आदि ज्ञान विद्या के ग्रन्थ हैं।

अर्थवेद : शिल्प-शास्त्र, जिसके प्रतिपादन में विश्वकर्मा, त्वष्टा, देवज्ञ और मयद्भत सहिंता रची गयी है।

अंग :

मनुकृत : मानवकल्याण सूत्र आदि आश्वालायन कृत : श्रौत सूत्र।

पाणिनी कृत : अष्टाध्यायी, धातु-पाठ, गण-पाठ, पतंजलि कृत : व्याकरण महाभाष्य।

यास्क मुनि कृत : निरुक्त, निघण्टुवसिष्ठ मुनिकृत : ज्योतिष, सूर्य सिद्धांत।

वेदों में दो विद्या है-अपरा और परा। अपरा पृथ्वी और तृण से लेकर प्रकृति पर्यन्त पदार्थों का ज्ञान है और परा सर्व-शक्तिमान ब्रह्म की प्राप्ति का विज्ञान। परवर्ती साहित्य में इन्हें अविद्या और विद्या नाम से भी पुकारा गया है। अविद्या का अर्थ है ऐसा ज्ञान जिससे प्रेय मिले और विद्या का अर्थ होता है ऐसा ज्ञान जिससे श्रेय मिले। अविद्या भी ज्ञान है, विद्या भी ज्ञान है। विज्ञान अविद्या का हिस्सा है क्योंकि उससे प्रेय मिलता है, विद्या हम उसे कहते हैं जिससे आत्मा मिलती है। प्राचीन भारतीय विद्वानों ने विद्या को चार भागों में बांटा-1. आन्वीक्षिकी, 2. त्रयी, 3. वार्ता, 4. दंड नीति।

आन्वीक्षिकी में विज्ञान (साइंस) त्रयी में धर्माधर्म (स्टेटिक्स) वार्ता में अर्थानर्थ (एक्सचेंज) और दंड नीति में नय और अनय (पॉलिटिक्स) का समावेश होता है। ऋग्वेद का संगमन सूक्त (सोसिऑलोजी) नासदीय सूत्र (कॉस्मिक डेवलपमेंट) यम-यमी सूक्त (सेक्स रिलेशन) जैसे विषय सभ्यता के ऊंचे आदर्श हैं।

इसी का परिणाम था की हिन्दू संस्कृति में चौदह स्वतंत्र दर्शनशास्त्र शाखाओं का जन्म हुआ। विश्व इतिहास एवं राष्ट्रों के जीवन में इससे अनूठा प्रयोग अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।
1. नास्तिक दर्शन 2. लोकायत दर्शन 3. बौद्ध दर्शन 4. आर्हत (जैन) दर्शन 5. आस्तिक दर्शन 6. वैशेषिक दर्शन 7. न्याय दर्शन 8. सांख्य दर्शन 9. योग दर्शन 10. पूर्व मीमांसा दर्शन 11. उत्तर मीमांसा दर्शन 12. शैव दर्शन 13. पाशुपात दर्शन 14. प्रत्यभिज्ञा दर्शन।

जानूं और बदल जाऊं

हमने इस देश में जीवन के चार चरण किये थे। पहले चरण को हमने ब्रह्मचर्य कहा था। यह शब्द बड़ा अनूठा है। इस शब्द का अर्थ है-ब्रह्म जैसी चर्या, ईश्वर जैसी चर्या, ब्रह्म जैसा आचरण। पच्चीस वर्ष का पहला आश्रम श्रम का, साधना का, संकल्प का आश्रम था। पहला आश्रम जबकि व्यक्ति के जीवन में प्रभात है। शक्ति का, शक्ति के संचय, प्रयोग, क्षमता के विकास का समय है।

ज्ञान वही सार्थक है, जिसे जानने से ही मेरे जीवन में रूपांतरण हो, ज्ञान का अर्थ ही है जो क्रान्ति हो जाए। जानूं और बदल जाऊं। बुद्ध ने तीन शब्द उपयोग किये हैं-प्रज्ञा, शील, समाधि। बुद्ध कहते है-जितनी प्रज्ञा बढ़े, जितनी समझ बढ़े उतना शील रूपांतरित होता है, चरित्र बदलता है, जितना चरित्र रूपांतरित हो उतनी समाधि निकट आती है। ज्ञान का अर्थ है जो स्वयं अनुभूत हुआ हो। जानकारी का अर्थ है जो दूसरों ने अनुभव की हो और आपने केवल संग्रहित कर ली हो। ज्ञान अगर उधार हो, तो पांडित्य बन जाता है। ज्ञान अगर अपना, निजी हो तो प्रज्ञा बनती है-(ओशो)।

इसी के फलस्वरूप सामाजिक क्षेत्र में श्रेय और प्रेय की अवधारणा को सम्मति मिली। स्वतन्त्रता एवं स्वभावानुसार अपने पथ का चयन कर जीवन निर्वाह कर सकने की आजादी। श्रेय अर्थात कल्याण का (मार्ग) साधन, प्रेय अर्थात प्रिय लगने वाले भोगों का साधन। श्रेय से अर्थ है-वह जो श्रेष्ठ है, वह जो सत्य है, वह जो परम आत्यंतिक है, शुभ है, शिव है और प्रेय से अर्थ है-वह जो प्यारा है, प्रिय है, चित को प्रसन्न करता है, किसी काम को, किसी वासना को तृप्त करने का आश्वासन देता है। प्रेय का अर्थ है-जिससे वासना प्रफुल्लित होती है और श्रेय का अर्थ है-जिससे आत्मा प्रफुल्लित होती है।

परिवार का विकास ज्ञान की प्रथम एवं महत्वपूर्ण पाठशाला के रूप में किया गया क्योंकि परिवार ही एक ऐसा शिक्षणालय है जिसमें व्यक्ति स्नेह और सौहार्द का, गुरुजनों के प्रति आदर और भक्तिभाव का एवं सामूहिक कल्याण के लिए वैयक्तिक प्रवृतियों और महत्वाकांक्षाओं को दबाने का पाठ सीखता है। सत्य, दान, त्याग, वात्सल्य, मित्रता, सेवा आदि सदुणों का विकास इन विभिन्न संबंधों से ही होता है।

अनादिकालीन संस्कृति

एक विशाल सांस्कृतिक राष्ट्र भारत के उत्तर में कश्मीर, मध्य में काशी तथा दक्षिण में कांची सर्वप्रमुख शिक्षा केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित थे। पूरब से पश्चिम तक की यात्रा में बंग, अंग धारा, आहिलपाटण तथा वल्लभी भी कम न थे। यहां गुरुकुल थे, विद्यापीठें थीं, आश्रम थे, विद्यालय थे परन्तु विश्वविद्यालय न था। संभवत: तब पश्चिमोत्तर भारत में तक्षशिला में पहली बार एक विश्वविद्यालय का स्तर पाया। यह वही क्षेत्र था, जहां कभी सैंधव सभ्यता के शिखर नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो विद्यमान थे।

गुप्तकालीन एवं मौर्यकालीन भारत विश्व विजयी था, अपराजेय था। विकास के चरमोत्कर्ष पर था। समृद्ध, संपन्न, स्वर्ण-पाखी भारत। जब तक बलशाली हाथों में सत्ता थी सुख का साम्राज्य था लेकिन जब सत्ताकेंद्र कमजोर होने लगे, मठों की राजनीति परवान चढ़ने लगी, सामाजिक विषमता के साथ-साथ सभ्रांत एवं सामान्य जन के बीच दूरियां भी बढ़ने लगी। समाज विभक्त होने लगा। स्वार्थ पूज्य और संवेदना हेय होती गयी। सम्पदा केंद्रीकृत होने लगी। वर्ण व्यवस्था के बौद्धिक तारतम्य को तोड़कर इसे जन्म एवं जातिगत पहचान के साथ जोड़ दिया गया। कुल मिलाकर एक अराजकता का वातावरण निर्मित हो रहा था, जहां कोई किसी के साथ नहीं था और सामाजिक विभाजन, आपसी वैमनस्य, विषमताओं की चौड़ी होती खाई से पराधीनता हमारी नियति बन गयी।

ईसा की आठवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण तक भारत में विदेशी शासन का यह अभिशाप है कि हमें अपने राष्ट्र के प्राचीन सांस्कृतिक और भौगोलिक वृतांत भुलाए गए। अरब, तुर्क, मंगोल खिलजी, मुगल इन सब आततायी जातियों का आक्रमण इसी समृद्धि को पाने की लालसा में हुए। अकूत धन-सम्पदा, अथाह ऐश्वर्य, स्वर्गीय सुखों से संपन्न वसुंधरा किसी को भी ललचाने के लिए पर्याप्त थी। ऐन्द्रिक सुख से भरपूर और अतीन्द्रिय चेतना से अधिग्रहित आनंद सब कुछ यहां था। शायद इसीलिए इसे कभी देवभूमि की संज्ञा से भी महिमामंडित किया गया था।

हिन्दुओं ने पहले पहल मुद्रा का निर्माण किया था, जैसा श्री प्रिसेप ने कहा है-ईसा के 800 वर्ष पूर्व भी हिन्दुओं में विनिमय की सुव्यवस्थित प्रथा प्रचलित थी। उस समय की आवश्यकताओं के अनुसार हिन्दुओं द्वारा संगठित सरकार सर्वश्रेष्ठ थी और उनके द्वारा निर्धारित न्याय के नियम ही इजिप्शियन, परसियन, रोमन और ग्रीक नियमों के आधार थे। जब अभी विश्व को अक्षर ज्ञान भी न था तब नालंदा, तक्षशिला, श्रीधन्य और कटका के विश्व-विद्यालय छात्रों से परिपूर्ण रहा करते थे।

जहां तक भाषा का प्रश्न है इसे डॉ. वेलेंटाइन और बाप्प जैसे विद्वानों ने भी मुक्त कंठ से स्वीकार किया है कि 'संस्कृत' ही एक ऐसी भाषा थी जो विश्वभर में प्रचलित थी और यही समस्त भारतीय और यूरोपियन भाषाओं की जननी भी है। हिन्दुओं को अक्षर और भाषाज्ञान अनादिकाल से है और ईसा के 2400 वर्ष तथा इब्राहीम के 800 वर्ष पूर्व की लिखी पुस्तकें पाई गई हैं।

हिन्दू संस्कृति ने बहुत कुछ दिया है

अब लीजिए हिन्दुओं के साहित्य को। जहां तक वेद का प्रश्न है, सभी विद्वानों ने उसे सर्वश्रेष्ठ माना है। प्रो. मैक्समूलर ने कहा है कि इसकी समानता में विश्व-साहित्य ने अब तक कुछ भी नहीं दिया। फ्रांसीसी दार्शनिक श्रीवाल्टेयर ने जब ऋग्वेद को देखा तो वह आश्चर्य से चिल्ला उठा कि 'केवल इसी दिन के लिए पश्चिम पूर्व का सदा ऋणी रहेगा'। प्रसिद्ध व्याकरण शास्त्री सर मोनियर विलियम्स ने पाणिनि काव्याकरण देखकर कहा-'इससे बढ़कर विश्व ने व्याकरण के नियम कभी बनाए ही नहीं। इसका एक-एक सूत्र आश्चर्यचकित कर देता है'। काव्य में विश्व के किसी राष्ट्र ने ऐसा साहित्य नहीं उत्पन्न किया जो रामायण और महाभारत की समानता कर सके। वेदों के अनुवादक प्रिंसिपल ग्रिफिथ ने रामायण के बारे में लिखा है-'विश्व के किसी भी काव्य में कवित्व और नैतिकता का ऐसा सम्मिश्रण नहीं पाया जाता। रामायण की समानता होमर रचित तीन इलियड और महाभारत की समानता बारह इलियड भी नहीं कर सकते'।

भारतीय नाट्य शास्त्र पर विलियम जोन्स ने लिखा है कि 'भारतीय नाटकों की समानता में आज विश्व के उन्नततम राष्ट्रों के नाटक भी नहीं आ सकते'। अभिज्ञान शाकुन्तल को पढ़कर तो जर्मनी का प्रसिद्ध कवी गेटे गद्गद् हो गया। मेघदूत के बारे में श्री फाउच ने लिखा है-यूरोपियन साहित्य में इसका जोड़ नहीं। कथा साहित्य में श्री एल्फिंस्टन के मतानुसार हिन्दू विश्व शिक्षक है।

विज्ञान की कोटि में भी प्राचीन भारत और हिन्दू संस्कृति ने बहुत कुछ दिया है। लार्ड ऐम्मे थिलजोसन 1905 में मद्रास के गवर्नर थे, कहा था 'चिकित्सा विज्ञान की जन्मभूमि भारत है। यहीं से पहले अरब वालों ने इसे सीखा और 17वीं शताब्दी के अंत में यूरोपियन चिकित्सकों ने इसे अरब वालों से सीखा'। शल्य चिकित्सा के बारे में मेनिंग ने लिखा है-हिन्दुओं के शल्य चिकित्सा सम्बन्धी यंत्र अत्यंत तीव्र हुआ करते थे। उनके द्वारा एक बाल को भी दो बराबर भागों में बांटना अत्यंत सरल था। गणित में भी हिन्दुओं की देन बेजोड़ है। वास्तव में इस विज्ञान को इतना उन्नत करने का श्रेय इन्हीं को है। सर मोनियर विलियम्स के कथनानुसार बीजगणित भी अरबों ने हिन्दुओं से सीखा। जहां तक रेखागणित का प्रश्न है, इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि पिथागोरस का 47वां थोरम हिन्दुओं ने कई शताब्दियों पूर्व ही हल कर दिया था।

ज्योतिष के बारे में श्री बेवर कहते हैं-अरब हिन्दुओं के शिष्य थे। मि. डेविस के गणनानुसार हिन्दू ज्योतिष-विशारद पराशर ईसा के 1391 वर्ष पूर्व हो चुके हैं। मि. कोलब्रुक ने लिखा है कि 'आर्यभट्ट को पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना ज्ञात था। उन्होंने सूर्य और चंद्रग्रहण के वास्तविक कारण का भी पता लगाया था।'

हिन्दुओं की शासन व्यवस्था उनके राज नियम और न्याय विभाग के सुगठन की महत्ता तो निर्विवाद है। श्री लुईजे कोलियट अपनी पुस्तक बाइबल इन इंडिया में लिखते हैं 'मनु स्मृति वह नींव है जिस पर इजिप्शियन, पर्शियन, ग्रीक और रोमन न्याय और नियमों का भव्य प्रासाद खड़ा है और आधुनिक यूरोप पर भी मनु का एक विशेष प्रभाव है।

इतिहास आचार शास्त्र की प्रयोगशाला है। उसमें मनोविज्ञान है, अध्यात्म है, समाजशास्त्र है, राजनीति, धर्मनीति, अर्थशास्त्र और कामशास्त्र सभी कुछ समाया हुआ है। जीवन के रंगमंच पर मनुष्य के कार्यों का अभिनय ही तो इतिहास है। इतिहास हमारे निर्णयों, उनके परिणामों एवं अनुभवों का कोष है। इतिहास ऐसा शिक्षालय है जिसमें जीवन के समस्त रंगों का समावेश है। इतिहास अतीत में बोया गया वह बीज है जिसकी फसल हम आज काट रहे हैं। हमारे कर्मफलों को प्रकृति कुछ को संग-संग तत्काल लौटा देती है और कुछ भविष्य के लिए संजोकर रख लेती है। इसी कारण हम इतिहास से तात्कालीन फलाफल और दूरगामी परिणाम दोनों से बंधे रहते हैं।

घातक शिक्षा नीति

ब्रिटिश शासन काल शिक्षा के क्षेत्र में बड़े बदलावों का समय रहा है। जब मैकाले ने भारतवर्ष में विदेशी शिक्षा की नींव डाली थी तब उनका यह स्पष्ट उद्देश्य था कि अंग्रेजी शिक्षा से भारतवासी भारतीय भेष में पूरे अंग्रेज बन जायें। उन महाशय के शब्द नीचे उद्दृत किये गए हैं-"English education will train up a class of persons Indian in colour and blood but English in tastes, opinions, morals and intellects". अर्थात अंग्रेजी शिक्षा से एक ऐसी जाति तैयार होगी जो रंग और रक्त में भारतीय होगी किन्तु भाव, विचार, धर्म और बुद्धि में अंग्रेज होगी।

मैकाले ने सन् 1836 में अपने पिता को एक पत्र में लिखा-'हिन्दुओं पर इस शिक्षा (अंग्रेजी) का असर हमारे उद्देश्यानुकूल होता है जो हिन्दू अंग्रेजी शिक्षा पा लेता है फिर उसका अपने मजहब पर सच्चा विश्वास नहीं रह जाता। कुछ लोग दिखाने के लिए ऊपर से हिन्दुधर्म से चिपटे रहते हैं और कुछ ईसाई धर्म स्वीकार कर लेते हैं। यह मेरा पक्का विश्वास है कि यदि शिक्षा सम्बन्धी हमारी नीति पर अमल किया गया तो अब से तीस साल बाद बंगाल के भद्र लोगों में एक भी मूर्ति-पूजक बाकी न रह जाएगा।'

मैकाले की हेय और घातक शिक्षा नीति से उत्पन्न जातीय ह्रास का चित्र तात्कालीन वायसराय लार्ड लैंसडाउन व लार्ड कर्जन ने भी खींचा। कर्जन ने कहा-'यदि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को उच्च मानवीय मूल्यों और बौद्धिकता की पूर्णता से आदर्श मानव के रूप में प्रस्तुत करना है तो हमारी शिक्षा प्रणाली नितांत असफल है।'

ब्रिटिश पार्लियामेंट के प्रसिद्ध सदस्य केर हार्डी ने अपनी पुस्तक 'इंडिया' के पृष्ठ 5 पर लिखा है-'मैक्समूलर ने सरकारी उल्लेखों के आधार पर और एक मिशनरी रिपोर्ट के आधार पर, जो बंगाल पर अंग्रेजों का कैंजा होने से पहले वहां की शिक्षा की अवस्था के सम्बन्ध में लिखी गयी थी, लिखा है कि उस समय बंगाल में 80 हजार देशी पाठशालाएं मौजूद थी। अर्थात सूबे की आबादी के हर चार सौ मनुष्यों के पीछे एक पाठशाला मौजूद थी। इतिहास लेखक लाडलो अपने 'ब्रिटिश भारत के इतिहास' में लिखता है कि 'प्रत्येक ऐसे हिन्दू गांव में जिसका कि पुराना संगठन अभी तक कायम है, मुझे विश्वास है कि आमतौर पर सब बच्चे लिखना, पढ़ना, हिसाब करना जानते हैं किन्तु जहां कहीं की ग्राम पंचायत का हमने नाश कर दिया है, जैसे बंगाल में, वहां ग्राम पंचायत के साथ-साथ गांवों की पाठशाला भी लुप्त हो गयी है।'

शिक्षा : भविष्य की साम्राज्ञी

वर्तमान सदा अतीत से जुड़ा होता है। अतीत की श्रृंखलाओं से आज बंधा होता है। यह जरूरी नहीं की अतीत का सब कुछ आज अप्रांसगिक हो। जीवनमूल्य, मानवीय आकांक्षाएं और चरित्र प्रत्येक युग में ऊपरी सतह पर बदले हुए लगते हैं लेकिन मानसिक धरातल पर इनमें कभी भी आमूलचूल परिवर्तन नहीं होता। व्यक्तिगत भय, आवेश, आवेग, लिप्साएं नए रूप धारण करती हैं जिनसे कलेवर तो बदलता है लेकिन आतंरिक संरचना नहीं। बहुत सारी विषमताओं, विसंगतियों और विरोधाभासों के बीच व्यक्ति विकारों को ही अपना सहचर बनाते आया है और यही कारक तत्व सभ्यताओं, संस्कारों एवं सामजिक सरोकारों को पतन के गर्त में डूबाकर अंतत: नष्ट भी करता है। राष्ट्रीय जीवन के इस दुखद परिदृश्य की पटकथा शिक्षा व्यवस्था के उत्कर्ष एवं अपकर्ष से बनती भी है, बिगड़ती भी है।

नवीनता परिवर्तन सापेक्ष है इसलिए भी अतीत त्याज्य नहीं है। अतीत बीज स्वरुप है जिसमें से ही नवीनता का पौधा पनपता है, पल्लिवत होता है, पुष्पित होता है। समय के बिंदु पर अतीत और वर्तमान प्रतिपल एकाकार होकर भविष्य की आधारशिला रखते हैं। यही यात्रा है जो प्राणियों से लेकर प्रकृति तक प्रत्येक सजीव-निर्जीव, सचल-अचल, पार्थिव एवं मानसिक भूतों पर समान रूप से समय के साथ अनवरत प्रवाहमान रहती है।

समय का तकाजा है 'हमें अपने श्रेष्ठ ज्ञान को आधुनिक स्वरुप में, अर्वाचीन मनुष्य को बोधगम्य भाषा में प्रतिपादित करना होगा। हमारी प्राचीन शक्ति को नूतन परिधान पहनाना होगा। नया स्वरुप व्यर्थ है, यदि आतंरिक शक्ति पुरानी न हो, वह मात्र उपहास होगा। इसी प्रकार सामर्थ्य पुराना हो पर यदि उसकी अभिव्यक्ति नवयुगानुरूप न हो तो वह भी मूर्खता होगी (भगिनी निवेदिता)।'

शिक्षा की महत्ता पर काका साहेब कालेलकर ने कहीं लिखा था- अपनी शक्ति का सम्पूर्ण भान होने पर शिक्षा (जिसे मैं विनया कहता हूं) कहेगी, 'मैं सत्ता की दासी नहीं हूं, कानून की किंकरी नहीं हूं, विज्ञान की सखी नहीं हूं, कला की प्रतिहारी नहीं हूं, अर्थशास्त्र की गुलाम नहीं हूं। मैं तो धर्म का पुनरागमन हूं। मनुष्य के हृदय, बुद्धि तथा दूसरी सब इन्द्रियों की स्वामिनी हूं। मानस शास्त्र और समाज शास्त्र मेरे दो पांव हैं, शिल्प और कला मेरे दो हाथ हैं, विज्ञान मेरा मस्तिष्क है, निरीक्षण और तर्क मेरी आंखें हैं, इतिहास और गाथाएं मेरे कान हैं, स्वतन्त्रता मेरा श्वास है, उत्साह और उद्योग मेरे फेंफड़े हैं। धीरज मेरा व्रत है, श्रद्धा मेरा चैतन्य है और सर्वोदय मेरा प्रसाद है। मैं ऐसी जगदम्बा हूं-जगद्धात्री हूं। मेरी उपासना करने वाले को किसी का मुंह नहीं देखना पड़ता। उसकी सारी इच्छाएं मेरे द्वारा ही तृप्त होगी। मैं भविष्य की साम्राज्ञी हूं। मेरे द्वारा ही मनुष्य परिपूर्ण और कृतार्थ बनेगा।

खामियों से सबक लेना जरूरी

समय गतिशील है। पल-पल परिवर्तन वक्त की पहचान है। आधुनिक युग यांत्रिक युग है। वैज्ञानिक उन्नति के वर्तमान शिखर पर मानवीय क्षमताओं में आशातीत वृद्धि हुई है। मानव अपने इतिहास के उस दोराहे पर खड़ा है जहां विनाश और विकास के पथ एक दूसरे को काटते हैं। इंसान ने उन्नति की इन चोटियों पर पहले भी कदम रखे थे लेकिन वह अपनी विजय एवं महत्वाकांक्षाओं को पचा नहीं पाया और जाने-अनजाने विनाश की राह पर उतरता चला गया। हाथ में आया ज्ञान-विज्ञान विनाशलीला की भेंट चढ़ गया और एक बार वह फिर वहीं आकर खड़ा हो गया जहां से चलना शुरू किया था। ऐसा बहुत बार हुआ है। पुरातात्विक साक्ष्य इसकी पुष्टि करते हैं।

जब-जब शिक्षा से विनय का लोप हुआ है। जब-जब आचरण धर्मविहीन हुआ है, जब-जब कर्तव्यों की अवहेलना हुई है, शापित मानवता नष्ट होने को मजबूर हुई है। शिक्षा ही वह कड़ी है जो पशुता से मानव को मानव बनाती है। नश्वर जगत में जब-जब शाश्वत मूल्यों की अनदेखी की जाएगी जीवन अपनी प्रभा खोता जाएगा और अंतत: प्रकृति के हाथों नष्ट कर दिया जाएगा। प्रवृति और प्रकृति के इस द्वंद्व में जीवन की सत्ता सदैव प्रकृति के पक्ष में खड़ी होती है। शिक्षा हमारी प्रवृतियों को नियंत्रित कर प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाये रखने का उपक्रम है।

इतिहास मानवीय प्रवृति और चरित्र का दर्पण है साथ ही साथ ज्ञान-विज्ञान, शिल्प, कला वैभव का सबसे भरोसेमंद राजदार भी है। युगीन उन्नति-अवनति, गति-प्रगति का लेखा-जोखा हमें इतिहास ही तो बतलाता है। संस्कार, समृद्धि और सामाजिक स्वरुप एवं सरंचना की सबसे सटीक जानकारी हमें इतिहास के इतिवृत में ही संजोयी गयी मिलती है। इसलिए जो राष्ट्र अपने इतिहास की अवहेलना करता है, उससे इतर राह पर चलने की कुचेष्टा करता है उसका भूगोल अक्षुण्ण नहीं रहता क्योंकि इतिहास के इन्हीं पृष्ठों में उन कमजोर क्षणों का समावेश भी होता है जो समाज और राष्ट्र के पतन का कारण बनते हैं। आज की पीढ़ी इतिहास से बेखबर भी है और उदासीन भी। इसलिए प्रक्षिप्त एवं विकृत तथा वास्तविक एवं प्रामाणिक इतिहास में पार्थक्य करना श्रमसाध्य बनता जा रहा है। व्यक्ति जब स्वार्थ देखता है, विनाश के वातायन बुद्धि को तमाच्छन्न कर गति-प्रगति को प्रतिहत करने लगते हैं। प्रमाद एक ऐसा रोग है जो प्रसन्नता को जीवन में उतरने नहीं देता। वही समाज वैभव संपन्न बनता है जिसने विद्या को जीवनदायिनी शक्ति के रूप में अंगीकार किया है।

अतीत में सब अच्छा ही हुआ है, यह आवश्यक नहीं। प्रत्येक काल की अपनी कमजोरियां और कामयाबियां होती हैं। वर्तमान का दायित्व है खूबियों को सहेजना। खामियों से सबक लेना। उत्थान और पतन के कारकों का अध्ययन कर उन्हें वर्तमान के प्रयोजन सापेक्ष बनाना। आवश्यकता अनुरूप परिवर्तन द्वारा सुसंगत एवं समृद्ध करना। सृष्टि संरचना में उत्तरोत्तर संवर्धन की संभावना सदैव स्थित रहती है, जीवन भी उसी का एक अंग है। हमारी सम्पूर्ण यात्रा शून्य से शिखर की यात्रा है जो पूर्णता पर समाप्त होती है। जहां तर्क अप्रभावी हो जाते हैं, कामनाएं नि:शेष हो जाती हैं, अभिन्नता फलवती होती हैं और अनेकांत की अवधारणा साक्षात दृष्टिगत बनती हैं।

नवीन चिंतन क्या हो ?

ज्ञान तो योग है, वह हममें बहुत कुछ जोड़ देता है। किन्तु ज्ञान की अपनी मीमांसा भी है जो हममें से बहुत कुछ छांटकर काट भी देती है। शायद इसीलिए संसार के अधिकांश महान व्यक्तित्व कोई बहुत बुद्धिमान व्यक्तित्व नहीं रहे। ऐसे में प्राय: ऐसा लगता है कि हमारी शिक्षा के जो वैशेषिक मानदंड हैं वे न्यायोचित नहीं रह गए हैं। इसी कारण गोयवल्स को कहना पड़ा कि बुद्धिमत्ता चरित्र के लिए संकट है।

ज्ञान अगर वाकई सबकुछ दे देता तो 'सा विद्या या विमुक्तये' कहने वाले क्यों 'चरैवेति चरैवेति' कहकर भटकते रहते और ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़ने वाले गहरे डूब कर मोती कैसे ला पाते।

चारित्रिक, मानसिक तथा आर्थिक समृद्धि का आधार शिक्षा ही है। इसकी सात्विकता एवं शुद्धता से ही आदर्श मानवता विकसित होती है। नए समाज के गठन में शिक्षा का स्वरुप कैसा हो कतिपय बिंदुओं पर विमर्श हमारी राह को आसान बना सकता है।

शिक्षा स्वरोजगारोन्मुख हो। श्रम का सम्मान हो। प्रतिस्पर्धा में नैतिकता का पालन हो। शोधार्थियों के लिए विशेष सुविधाओं का प्रबंध हो। स्वहित पर सामुदायिक हित की वरीयता हो। संकल्प एवं समर्पण के प्रति निष्ठा का भाव हो। परम्पराओं का सम्मान और इतिहास की सच्ची जानकारी का समावेश हो। स्वभाव के अनुरूप रूचिकर विषयों को चुनने की स्वतन्त्रता हो। अधिकारों के साथ कर्तव्यों की अनुपालना सुनिश्चित हो। समाजशास्त्र, नागरिकशास्त्र और राष्ट्र नायकों के चरित्र का पठन-पाठन अनिवार्य हो। संभावनाओं को तलाशने के तत्पश्चात उनकी पूर्णता के प्रयासों का विकसित तंत्र हो।

आज शिक्षा जगत में नए चिंतन की जरूरत है क्योंकि हमारे सारे प्रयास एकांगी हो रहे हैं। पैसा, पद, प्रसिद्धि, प्रशस्ति और प्रभाव के इर्द-गिर्द ही हमारा सारा जीवन हताशा के साथ दौड़ रहा है। जब श्रम अपमानित होने लगे और सेवा तिरस्कृत तब ईर्ष्या की आग सबकुछ तहस-नहस एवं जला देने को उद्द्यत हो जाती है। परिणाम होता है मतभेद, मनभेद एवं विखंडन। सर्वांगीण शिक्षा पद्धति से हम नए और अच्छे मानव का निर्माण कर सकते हैं जो 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' के आदर्शों के साथ जीवन को आनंद से आपूरित कर सके।

शिक्षा के प्रति नवीन चिंतन क्या हो? पेचीदा प्रश्न है लेकिन शिक्षा ही हमें सीखाती है जिसका समाधान न हो ऐसी कोई समस्या होती ही नहीं। धैर्य और विवेकपूर्वक मनन हमारी जिज्ञासा को शांत एवं तृप्त कर सकता है। शिक्षा व्यवस्था में सुधार इसलिए भी जरूरी है कि मानव आज तनाव एवं चारित्रिक संकट के दौर से गुजर रहा है। 'कट-पेस्ट-फॉरवार्ड' के युग में शिक्षा भी 'फास्ट फूड' बनकर रह गयी है जो सुपाच्य नहीं है। परिवर्तन समय की मांग है। युगीन सन्दर्भो से विवशता के साथ नहीं निपटा जा सकता। सटीक, सही, सम्वादी एवं पूर्ण शिक्षण के लिए हमारी योजना का प्रारूप कैसा हो, विहंगावलोकन करते हैं-

प्रस्तावित प्रारूप

शिशु की प्राथमिक शिक्षा का आगाज परिवार से होता है। चार वर्ष तक शिशु अपने लालन-पालन के साथ घर में ही शिक्षित किया जाना चाहिए। शब्द, उच्चारण, रंग, आस-पास की वस्तुएं, प्रकृति, प्राणी जगत एवं अन्यान्य बातें जो आमतौर पर परिवेश सापेक्ष होती हैं, शिशु के साथ साझा की जानी चाहिए। धर्म, नैतिकता, सत्य, शील एवं वीर गाथाओं का श्रवण इस शिक्षा का अपरिहार्य हिस्सा होना चाहिए। पांचवें वर्ष में शिशु का विद्यालय प्रवेश हो लेकिन समस्त पाठ्यक्रम मौखिक हो, संवाद की महत्ता हो, स्मृति का वृहत्तम उपयोग हो। लिखित कार्य के लिए सिर्फ एक या दो अभ्यास पुस्तिका पर्याप्त होगी जिन्हें हस्तलिपि की सुंदरता के लिए, सूत्रों के संकलन के लिए, सिद्धांतों की व्याख्याएं जिनकी आवश्यकता परवर्ती अध्ययन में सन्दर्भ बन सकती हैं के लिए रखा जा सकता है। इसके लिए तीन वर्ष की समय सीमा हो और मातृभाषा अनिवार्य हो। शिक्षण के विषयों का चयन इस तरह से हो कि विद्यार्थी को पाठ्यक्रम बोझ न लगे। शिक्षा को क्रीड़ा जैसा लुभावना कलेवर देकर उसे सरल, सरस एवं ज्यादा से ज्यादा संवादी बनाया जाए, जिससे शिक्षा के प्रति रुचि और रूझान बना रहे। इसी काल-खंड में चारित्रिक उन्नयन एवं गणना, प्रकृति, खगोल, भूगोल, विज्ञान जैसे विषयों से परिचयात्मक चर्चा को सम्मिलित किया जाए।

उच्च प्राथमिक शिक्षा नौ वर्ष की उम्र से आरम्भ की जा सकती है। नौ से पंद्रह (छ: साल) विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास का समय निश्चित होना चाहिए। सूचनात्मक ज्ञान के साथ-साथ प्रायोगिक एवं प्रयोगशालाओं से सम्बन्धित प्रशिक्षण साथ-साथ होना चाहिए। विद्यार्थी के इस कालखंड को इस तरह गढ़ने का प्रयास होना चाहिए जिससे जीवन में आगे चलकर कभी स्वयं को असहाय स्थिति में न पाये। कला, शिल्प, वाणिज्य, वित्त एवं तकनीकी शिक्षा को संसाधनों से जोड़कर वास्तविक जीवन में उपयोग कैसे हो इसकी सुचिंतित व्यवस्था होनी चाहिए और एक बात हफ्ते में पांच दिन पाठ्यक्रम का शिक्षण, छठे दिन (शनिवार) व्यावहारिक यथा प्रयोगात्मक एवं क्रियात्मक प्रशिक्षण एवं सातवें दिन (रविवार) व्याख्यान, संगोष्ठी, वार्ता के लिए आरक्षित होना चाहिए। विचार विनिमय तथा जिज्ञासा ये ही वो माध्यम हैं जिनसे मति, मेधा और बुद्धि समृद्ध होती है और एक शुद्ध सात्विक एवं संयमित जीवन की नींव गहरी होती है।

सोलहवें वर्ष के पश्चात उच्चत्तम शिक्षा के पाठ्यक्रम को लागू किया जाए। स्वतंत्र शाखाओं के साथ रुचिपूर्ण विषयों के चयन की प्रक्रिया द्वारा यह कार्य किया जाना चाहिए। वर्तमान में प्रचलित समस्त विधाओं को सम्मिलित किया जा सकता है। शोध संस्थानों का विस्तार और विकास आधुनिक प्रोद्यौगिकी के साथ किया जाना चाहिए। ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी एवं अन्य समस्त विद्याओं का स्तर विश्व मानकों के समकक्ष हो यह सुनिश्चित किया जाए। नई शिक्षा नीति भय, भार और प्रतिस्पर्धा मुक्त हो, इसका विशेष ख्याल रखा जाना चाहिए। अनावश्यक एवं विसंगत पाठ्यक्रम के दवाब में यह पीढ़ी दिग्भ्रमित होती जा रही है। विषयों को चुनने की स्वतन्त्रता की जगह लकीर पीटते रहने की मजबूरी से बाल-मन कुंठित हो रहा है। सबकुछ जानने की पिपासा में एक को पूर्णत: जान पाना भी कठिन होता जा रहा है। लक्ष्य अगर आंख है, निशाना सटीक लगेगा, अगर निशाने पर पूरा वृक्ष है, जिस पर पंछी बैठा है, लक्ष्य च्युत होने की संभावना शत-प्रतिशत है।

इस आलेख में कुछ बिंदुओं को छुआ भर है। समग्र चिंतन के लिए यह आधार बन सकता है। आधुनिक शिक्षा कैसी हो, उसमें क्या समाविष्ट किया जाये, इसका विस्तृत केनवास पर मंथन होना चाहिए जिसमें प्रज्ञा-पुरूष, शिक्षाविद् एवं उच्च प्रशासनिक पदाधिकारी मिलकर युक्ति-संगत एवं 'सर्वतोभावेन' उपयोगी नई शिक्षा व्यवस्था के लिए अपनी प्रयोजन सिद्ध संस्तुति देकर सुख, समृद्धि, शान्ति की सहचरी शिक्षा को नूतन परिधान से सुसज्जित करें। लोक-कल्याण का यह कार्य जितनी शीघ्रता से हो उतना ही शिवम्, शुभम् एवं सुंदरम् का प्रसाद हमारे हाथों में होगा।

|| जय भिक्षु || || अर्हम || || जय महाश्रमण ||

श्रद्धांजलि

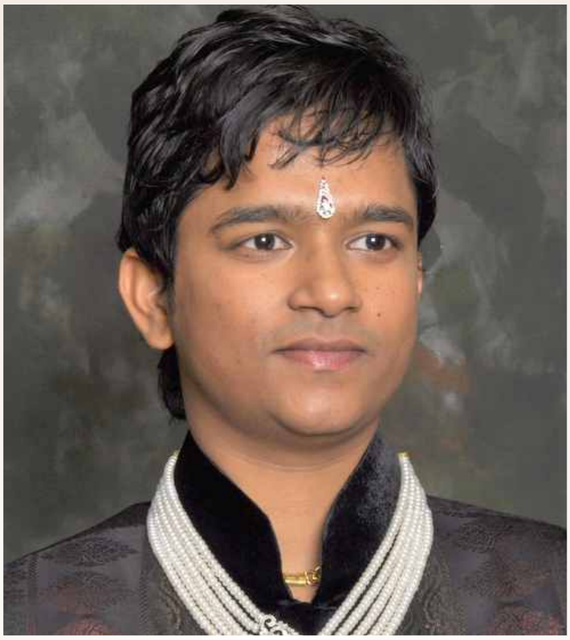

स्व. दिपेश रमेशचन्द्र गुगलिया

जन्म - 03-11-1987 स्वर्गवास - 10-02-2012

क्यों रुठ गए तुम हम सबसे, दिलों में हो गया सूनापन।
कर्मों का ऐसा चक्र चला, छोड़ चले तुम सब बन्धन।।

aroma®

PLASTICS

MFG. : QUALITY REPROCESSORS L.D., H.D., H.M., P.P.

16-17 Gopal Estate, Opp. Vallabhnagar, Odhav Road, Ahmedabad - 382 415 Guj. India
Tel. : + 91 79 22870270 Tele Fax : 079 - 22891528
Email: aromaplastic@yahoo.co.in

श्रीमती मांगीदेवी - भेरुलाल
श्रीमती संतोषदेवी - स्व. श्री मीठ्ठालालजी
सुशीलादेवी - रमेशचन्द्र
लीलादेवी - भिखमचन्द
पूजा - विरल
सहयोग, अंशुल एवं गुगलिया परिवार

मूल्यपरक-शिक्षा की एकमात्र प्रयोग विधि : अनुप्रेक्षा

हनुमानमल शर्मा

मूल्यों के विकास हेतु पूर्व में भी प्रयत्न हुए हैं एवं वर्तमान में भी हो रहे हैं परन्तु मूल्यों की प्रतिष्ठा केवल सैद्धान्तिक जानकारी और उसके अनुसार व्यक्ति को होने वाले लाभ से दृष्टान्तों, उदाहरणों, महापुरूषों की जीवनियों या उनके सद्प्रयत्नों की अवगति कराने से या केवल परिचित कराने से संभव नहीं है। मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए इससे भी अधिक आवश्यक है मूल्य-बोध के लिए किए जाने वाले आध्यात्मिक ध्यान-प्रयोग। इन प्रयोगों की आवृत्ति जितनी अधिक होगी, उतने ही मूल्य चरित्र का अंग बनते चले जायेंगे। जीवन विज्ञान की शिक्षा प्रणाली में मूल्य बोध के लिए आध्यात्मिक ध्यान प्रयोगों को प्रधानता दी गई है।

शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यों की चर्चा बहुत आवश्यक है। इसके दो पहलू है-मूल्य की सीमा का बोध और मूल्य-प्राप्ति के साधनों का बोध। मूल्य बोध में दार्शनिक दृष्टि बहुत आवश्यक है और मूल्य-प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक प्रयोग जरूरी हैं। केवल सैद्धान्तिक चर्चा से विद्यार्थी अपनी अस्मिता को पहचान सके और मूल्यों के प्रति समर्पित हो सके, यह कम संभव है। इसके लिए सिद्धांत और प्रयोग-दोनों का समन्वय आवश्यक है।

जीवन विज्ञान के अनुसार मूल्य-बोध के प्रयोग की विधि है 'अनुप्रेक्षा' (Contemplation)। प्रेक्षा का अर्थ है गहराई से अर्थात रागद्वेष रहित, तटस्थ या साक्षी भाव से अपने भीतर देखना, स्वयं

को देखना और स्वयं का अनुभव करना। प्रेक्षा द्वारा जिस सचाई को जान अथवा अनुभव कर लिया जाता है उसे प्राप्त करने के लिए प्रयास करना, बार-बार अभ्यास करना तथा उसे चरित्र का अंग बनाने का प्रयोग है-अनुप्रेक्षा। जैसे प्राय: बालक को परीक्षा का भय बना रहता है। उसे परीक्षा की चिन्ता लगी रहती है, कहीं असफल न हो जाऊं या अपेक्षित अंक प्राप्त नहीं कर पाऊंगा। इस भय से मुक्ति के लिए चाहे कितनी भी सैद्धान्तिक विचार प्रस्तुति शिक्षक द्वारा की जाये, चाहे मेहनत कर उत्तीर्ण हुए अन्य परीक्षार्थियों के दृष्टांत बताएं जाएं फिर भी भय बना ही रहता है, परन्तु 'अभय की अनुप्रेक्षा' का प्रयोग कराया जाये तो उचित निष्पत्ति प्राप्त की जा सकती है।

अनुप्रेक्षा चिन्तन की एकाग्रता का प्रयोग है। प्रेक्षा द्वारा प्राप्त सत्य की एकाग्रता से अनुचिंतन द्वारा पुन: अनुभूति के स्तर पर जाना अनुप्रेक्षा है। बार-बार अभ्यास से चित्त भावित होता है और इससे संस्कार का निर्माण या मूल्य जीवन का अंग बन जाते है। प्रेक्षा द्वारा जो कमियां (कमजोरियां) बालक द्वारा अनुभव की जाती है, उनसे मुक्त हो पाता है। अनुप्रेक्षा के प्रयोग हेतु दृढ़-इच्छाशक्ति, प्रयोग की नियमितता और निरन्तरता (प्रतिदिन 20 से 30 मिनट लगभग तीन माह तक) तथा शान्त और एकान्त स्थान आवश्यक है। सभी मूल्यों के प्रयोगों का क्रम इस प्रकार रहता है-

(1) इच्छा-शक्ति जाग्रत करना-संकल्प लेना - 2 मिनट

(2) महाप्राण ध्वनि - 2 मिनट

(3) कायोत्सर्ग - 5 मिनट

(4) विशेष चैतन्य केन्द्र पर रंग विशेष का ध्यान - 5 मिनट

(5) अनुप्रेक्षा वाली शब्दावली से स्वयं को भावित करना - 5 मिनट

(6) अनुप्रेक्षा के चिंतन पर अनुचिंतन करना - 10 मिनट

(7) महाप्राण ध्वनि से प्रयोग सम्पन्न करना - 1 मिनट

प्रत्येक मूल्य के लिए चैतन्य केन्द्र और रंग अलग-अलग निर्धारित हैं तथा उनके अनुसार आत्म-सुझाव शब्दावली भी परिवर्तित होती है। जैसे-अभय की अनुप्रेक्षा में आनन्द केन्द्र पर गुलाबी रंग के ध्यान के साथ अनुप्रेक्षा की जाती है।

अभय की अनुप्रेक्षा का प्रयोग निम्नानुसार है-

भय के कारण उपयोगी काम बंद नहीं किये जा सकते किन्तु भय आदमी को उपयोगी कार्यों में नहीं लगने देता। अब प्रश्न यह होता है कि आदमी अभय को अपने जीवन में कैसे उतारे? वह कैसे भयमुक्त बने? इसके लिए चार सूत्र हैं-

1. अभय की आस्था का निर्माण और दृष्टिकोण में बदलाव।
2. सामाजिक जीवन में भयमुक्ति के प्रयोग।
3. भय की ग्रन्थि से मुक्ति के लिए आनन्द केन्द्र पर गुलाबी रंग का ध्यान।
4. सही दृष्टि व आदर्श के लिए अभ्यास, चिंतन और अभय की अनुप्रेक्षा करें।

इस तरह 'अभय' होने में निम्नानुसार अनुप्रेक्षा करना लाभप्रद है-

अभय की अनुप्रेक्षा

1. महाप्राण ध्वनि — 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग (स्वत: सूचन से शिथिलीकरण) — 5 मिनट
3. अनुभव करें-अपने चारों ओर गुलाबी रंग के कण फैले हुए हैं। गुलाब के फूल की भांति चमकते हुआ गुलाबी रंग का श्वास लें। अनुभव करें, प्रत्येक श्वास के साथ गुलाबी रंग के कण शरीर के भीतर प्रवेश कर रहे हैं। — 3 मिनट
4. आनन्द केन्द्र पर गुलाबी रंग का ध्यान करें। — 3 मिनट
5. दर्शन केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें-'अभय का भाव पुष्ट हो रहा है। भय का भाव क्षीण हो रहा है। इस शब्दावली का नौ बार उच्चारण करें फिर इसका नौ बार मानसिक जप करें। — 5 मिनट
5. अनुचिंतन करें-'भय से विकसित शक्तियां कुंठित हो जाती है। नई शक्तियां विकसित नहीं हो पाती। भय आदमी को कमजोर बनाता है। कमजोर आदमी का कोई सहयोग नहीं करता। जो डरता है, उसे सभी डराते हैं। शक्ति के विकास के लिए अभय की साधना करूं, यह मेरा दृढ़ निश्चय है। मैं निश्चित ही भय से छुटकारा पा लूंगा।' — 10 मिनट
6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें। — 1 मिनट

आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में 'अभिभावक, शिक्षक और विद्यार्थी-यह एक त्रिकोण है। इसका एक साथ बदलना जरूरी है।' पूरे समाज में चरित्र का विकास होगा तभी विद्यार्थी में चरित्र का विकास हो सकता है। इसलिए शिक्षा को केवल बौद्धिक विकासपरक नहीं किन्तु भावनात्मक भी होना चाहिए, जिसे जीवन विज्ञान की शिक्षा द्वारा पूर्ण किया जा सकता है। इस त्रिकोण का शीर्ष शिक्षक ही हो सकता है। अत: शिक्षक को जीवन विज्ञान को समझकर इसका प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना अपेक्षित है।

* उद्देश्यहीन प्रवृत्ति बड़ी होकर भी अकिंचित्कर हो जाती है और उद्देश्य-प्रधान प्रवृत्ति छोटी होकर भी बहुत बड़ी हो जाती है।
* सफलता का मार्ग यही है कि कार्य के अनुरूप प्रयत्न हो, अल्प अनुष्ठान के लिए प्रयत्न और महान अनुष्ठान के लिए प्रयत्न भी महान हो।

आचार्य महाप्रज्ञ

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

श्री उत्तमचन्द, नेमीचन्द जैन

श्री महेन्द्र मरलेचा

बीड़

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

श्री लक्ष्मण

दिनेश कुमार जैन

राउरकेला

मैं एक पाखी हूं
उड़ान भरने आई हूं...

पूजा ऋतु बोथरा

21वीं सदी के इस आधुनिक युग में 'नारी' शब्द अपनेआप में कई मायने रखता है। किसी के लिए ये मां दुर्गा के रूप में शक्ति का परिचायक है तो किसी के लिए मदर टेरेसा के रूप में ममता की मूरत। किसी के लिए रानी लक्ष्मीबाई के रूप में हिम्मत है तो किसी के लिए महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के रूप में है समर्पण की सूरत।

आज नारी ने अपने पुरुषार्थ से विकास की हर ऊंचाईयों को छुआ है लेकिन अफसोस इस पुरुष-प्रधान समाज में आज भी नारी को अपने अस्तित्व को टिकाए रखने के लिए संघर्ष झेलने पड़ते हैं। 'नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं।' इस तुलनात्मक वाक्य ने विकासशील नारी के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है क्योंकि बंधुओं नारी केवल वही कार्य नहीं कर सकती जो पुरुष कर सकता है लेकिन वो सारे कार्य भी कर सकती है जो पुरुष कभी नहीं कर सकता। प्राचीन समय में नारी की दशा बहुत ही दयनीय थी, अनेक सामाजिक कुरीतियों का उसे सामना करना पड़ता था। राजा राममोहन रॉय तथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों ने इन कुरीतियों पर आवाज उठाई और नारी को स्वयं के प्रति जागृत करने का प्रयास किया लेकिन फिर भी शायद समाज में विशेष सजगता नहीं आई क्योंकि हमारे इस सभ्य-सुसंस्कृतिक समाज में नारी के जन्म को ही अशुभ माना जाता था। उसे कदम-दर-कदम अपमानित किया जाता था, उसे चार दीवारों में बंद रखा जाता था। विश्व की इस व्यापक समस्या को उभरता देख क्रांतिकारी युगप्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी का मन उद्वेलित हो उठा। उन्होंने युग की नब्ज को पकड़ा और 'नया मोड़' आंदोलन प्रारम्भ किया जिसमें मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए उन्होंने नारी समाज की शिक्षा और उत्थान के लिए अनेक विकासशील परिवर्तन किए।

आचार्यश्री तुलसी की पारखी नजरों का ही सुपरिणाम था कि 500 से अधिक संख्या से युक्त साध्वी समाज में 30 वर्षीय साध्वी कनकप्रभा के रूप में तेरापंथ धर्मसंघ के शुभ भविष्य को देख लिया। ये वही साध्वीप्रमुखा है जिनके जन्म पर किसी दिन बुआ ने कहा था कि 'अरे, मैं क्या खुशियां बांटू? घर में तो लड़की पैदा हुई है।' लेकिन इस बात पर चिंतन कीजिए कि बुआ भी उस व्यक्तित्व के जन्म पर क्या खुशियां बांटती जिस शख्सियत का तो जन्म ही इस संसार में खुशियां बांटने के लिए हुआ है। आज बैद परिवार में जन्म लेने वाली उस लड़की ने न केवल तेरापंथ के साध्वी समाज को अपितु विश्व के संपूर्ण नारी समाज को एक नई ओजस्विता और तेजस्विता प्रदान की है। ये वही नारी शक्ति है जिनके लिए आचार्यश्री तुलसी ने कहा था- 'कनकप्रभा ने तो मुझे साध्वी समाज की तरफ से निश्चिन्त बना दिया है। इसमें तो एक आचार्य बनने की योग्यता है।'

ये वही नारी शक्ति है जिनके लिए आचार्यश्री महाप्रज्ञजी फरमाते थे-'नारी समाज का गौरव है साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।' ये वही नारी शक्ति है जिन्हें आचार्यश्री महाश्रमणजी 'असाधारण साध्वीप्रमुखा' के रूप में सबोधित करते हैं।

बंधुओं, ये वही नारी शक्ति है जिन्हें आज संपूर्ण धर्मसंघ 'मातृहृदया महाश्रमणीजी' के रुप में नमन करता है।

आचार्यश्री महाश्रमणजी अनेकों बार नारी सशक्तिकरण पर फरमाते हैं कि 'श्रम, सेवा, समर्पण, सहनशीलता और संस्कारों का मूर्त रुप एक आदर्श नारी।' नारी तो शक्ति का एक सघन पुंज है और शक्ति जिस भी रूप में प्रकट होगी वह उसी रूप में परिलक्षित भी हो जाएगी। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के इस अवसर पर मैं नारी के अस्तित्व को उसी की भाषा में स्वरचित कविता के रूप में प्रस्तुत कर रही हूं-

मैं एक पाखी हूं।
उड़ान भरने आई हूं।।
मौका दो मुझे,
आसमान को छूने का
ऊंची उड़ान भरने का
नूतन सपने देखने का
उन्हें हकीकत में बदलने का
चाहत के बागों से
उनमें रंगीन मोतियों को पिरोने का।
एक मौका दो मुझे
ऊंची उड़ान भरने का।
मौका दो मुझे,
हाथों की टेढ़ी-मेढ़ी
लकीरों को जोड़ने का
रूढ़ियों की आधी-अधुरी
जंजीरों को तोड़ने का
पिंजरे के उस खतरनाक
जंजाल को छोड़ने का
मुसीबत के उस भयानक
कंगाल से लड़ने का
डर की उन काली
जटाओं से जुंझने का।
एक मौका दो मुझे,
लकीरों को जोड़ने का ।।
मौका दो मुझे,
कठिन रास्तों पर चलकर
मंजिल को पाने का,
दीपक की तरह जलकर
अंधकार को मिटाने का
सूरज की भांति ढ़लकर
हर शाम को बेहतरीन बनाने का।
हारने के बाद-
एक बार फिरसे जीतने का।
उन पथरीली राहों पर
दोबारा अब चलने का
चलने के बाद फिर से
एक और बार दौड़ने का,
दौड़ते हुए हार न मानने का,
अपने अंदर के जुनुन को जगाने का।
एक मौका दो मुझे
मंजिल को पाने का ।।
मौका दो मुझे,
आंखों में सपने सजाने का,
उन पर काला टीका लगाने का
कुछ अनकहे राज छिपाने का
खुद से ही खुद को
रू-ब-रू कराने का
दुनिया में अपनी अब
अलग पहचान बनाने का।
एक मौका दो मुझे
खुद को बेहतर बनाने का और
कुछ अलग कर दिखाने का ।।
क्योंकि-मत भुलना दुनियावालों-
मैं एक पाखी हूं।
उड़ान भरने आई हूं।।

BUILDING BRANDS ACROSS SEVEN CONTINENTS

hih7®
WEBTECH Pvt. Ltd.

We stand here to Bring together all the digital platforms under one roof.

- Branding & Design
- Website Development
- Digital Marketing
- Content Strategy & Copyrighting
- Mobile Applications

EXCLUSIVE OFFER
Website Starting at
~~$1000~~
$499

Hih7 delivers

Cost - effective | Quality | User - friendly | Web Design

Online marketing solutions to the global audiences

Manish Sethia, CEO
www.hih7.com

शोषण करने वालों पर लगे अंकुश

चारिमा

चूंकि अब तक कोई विचारणीय, अनुकरणीय तथा स्वीकार्य विकल्प प्रस्तुत न हो सका इसलिए वर्तमान शिक्षा को अपनाना लोगों की मजबूरी है। विकल्प के अंतर्गत जो प्रश्न उठते हैं, पहला यह है कि वर्तमान संन्दर्भों में एक सम्यक् भारतीय शिक्षा को अपनाना लोगों की मजबूरी है। विकल्प के अंतर्गत जो प्रश्न उठते हैं, पहला यह है कि वर्तमान संन्दर्भों में एक सम्यक् भारतीय शिक्षा को स्वदेशी, सार्थक और मूल्य आधारित बनाना है। इसके लिए भारतीय पद्धति से आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए। साथ ही गुरु एवं शिष्य के बीच भावनात्मक आत्मीय संबंधों के निर्माण पर जोर दिए जाने की जरूरत है। गुरु के महत्व को बढ़ाकर प्रबंध-तंत्र के वर्चस्व को घटाना भी आवश्यक है। उच्च-शिक्षा को सर्व सुलभ बनाने के लिए आर्थिक दबाव को तो कम करना ही होगा। इसके अलावा चरित्र निर्माण के लिए विशेष पाठ्यक्रम एवं प्रयास की आवश्यकता है।

वर्तमान शिक्षा में गुरु या अध्यापक श्रद्धा का पात्र न होकर वेतन भोगी नौकर बन गया। अध्यापक की भूमिका गौण हो गई तथा विद्यालय एवं विश्वविद्यालय के प्रबंध तंत्र की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई। वर्तमान शिक्षा का इतिहास अधिक प्राचीन नहीं है। प्राय: लोग इसे मैकाले की शिक्षा प्रणाली के नाम से पुकारते हैं। लॉर्ड मैकाले ब्रिटिश पार्लियामेंट के ऊपरी सदन का सदस्य था। 1857 की क्रांति के बाद जब 1860 में भारत के शासन को ईस्ट इण्डिया कंपनी से छीनकर महारानी विक्टोरिया के अधीन किया गया तब मैकाले को भारत में अंग्रेजों के शासन को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक नीतियां सुझाने का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था।

उसने सारे देश का भ्रमण किया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यहां झाड़ू देने वाला, चमड़ा उतारने वाला, करघा चलाने वाला, कृषक, मंत्र पढ़ने वाला आदि सभी वर्ण के लोग अपने-अपने कर्म को बड़ी श्रद्धा से हंसते-गाते कर रहे थे। सारा समाज संबंधों की डोर से बंधा हुआ था। शूद्र भी समाज में किसी का भाई, चाचा या दादा था तथा ब्राह्मण भी ऐसे ही रिश्तों में बंधा था। बेटी गांव की हुआ दामाद-मामा आदि रिश्ते गांव के हुआ करते थे।

इस प्रकार भारतीय समाज भिन्नता के बीच भी एकता के सूत्र में बंधा हुआ था। उस समय धार्मिक सम्प्रदायों के बीच भी सौहार्दपूर्ण संबंध था। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि 1857 की क्रांति में हिन्दू-मुसलमान दोनों ने मिलकर अंग्रेजों का विरोध किया था। मैकाले को लगा कि जब तक हिन्दू-मुसलमान के बीच वैमनस्यता नहीं होगी तथा वर्ण-व्यवस्था के अंतर्गत संचालित समाज की एकता नहीं हटेगी तब तक भारत पर अंग्रेजी शासन मजबूत नहीं होगा।

भारतीय समाज की एकता को नष्ट करने तथा वर्णाश्रित कर्म के प्रति घृणा उत्पन्न करने के लिए मैकाले ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को बनाया। अंग्रेजों की इस शिक्षा नीति का लक्ष्य था संस्कृति, फारसी तथा लोक भाषाओं के वर्चस्व को तोड़कर अंग्रेजी का वर्चस्व कायम करना। साथ ही सरकार चलाने के लिए देशी अंग्रेजी को तैयार करना। इस प्रणाली के जरिए वंशानुगत कर्म के प्रति घृणा पैदा करने और परस्पर विद्वेष फैलाने की भी कोशिश की गई थी। इसके अलावा परिश्रमी सभ्यता एवं जीवन पद्धति के प्रति आकर्षण पैदा करना भी मैकाले का लक्ष्य था।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में ईसाई मिशनरियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ईसाई मिशनरियों ने ही सर्वप्रथम मैकाले की शिक्षा-नीति को लागू किया। आज स्वतंत्रता के इतने वर्ष बाद यह स्पष्ट है कि मैकाले की शिक्षा नीति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूर्णतया सफल हो चुकी है। यह हमारे समाज के अभिजात्य वर्ग की मानसिक गुलामी का प्रतीक है।

आईएएस, आईपीएस आदि के माध्यम से आज भी देशी अंग्रेज तैयार किए जा रहे हैं। वंशानुगत कर्म के प्रति सभी वर्णहीन भावना एवं घृणा के शिकार हो चुके हैं। परिश्रमी सभ्यता एवं जीवन पद्धति के प्रति आकर्षण अपने चरम पर है। शिक्षा में मानव को योग्य एवं चरित्रवान बनाने का वास्तविक लक्ष्य छूट गया तथा डिग्री-सर्टिफिकेट का महत्व बढ़ गया। पेशेगत योग्यता की शिक्षा महंगी हो गई। इसने एक उद्योग का रूप ग्रहण कर लिया। सेवा भाव का लोप हुआ तथा व्यापारिक मनोवृत्ति हावी हो गई।

इस प्रकार वर्तमान शिक्षा से सामाजिक दायित्व एवं राष्ट्रीय कर्त्तव्य का ज्ञान न मिलने से विद्यार्थी स्वयं एवं परिवार केन्द्रित होकर अधिक से अधिक अर्थोपार्जन के वशीभूत है। वे अधिक से अधिक भौतिक सुख-साधनों के संग्रह-उपभोग को ही जीवन का लक्ष्य समझ बैठे हैं। येनकेन-प्रकारेण अर्थोपार्जन के लक्ष्य ने कर्म के अनुष्ठान में नैतिक मानदण्डों को नष्ट किया है। भौतिक सुखों को भोगने की सीमा टूटने से अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक समस्याएं उत्पन्न हुईं। अपनी भाषा संस्कृति तथा राष्ट्र के प्रति गौरव स्वाभिमान की भावना नष्ट हुई।

कहना न होगा कि वर्तमान शिक्षा विद्यार्थी को शरीर, मन एवं बुद्धि से रुग्ण बनाकर कुसंस्कृत तथा पतनोन्मुख बना रही है। राजनीतिक संघर्ष से भले ही देश को शारीरिक स्वतंत्रता मिली पर विगत साठ वर्षों में मानसिक-बौद्धिक परतंत्रता की बेड़िया मजबूत हुई हैं। वर्तमान शिक्षा की कमियों को स्वीकार कर विगत दो दशकों से इसमें आमूल परिर्वतन की आवश्यकता की बात को अनेक विद्वानों, विचारकों एवं राजनेताओं ने उठाया है।

वर्तमान शिक्षा में अध्यापक विद्यार्थी को योग्य बनाने के दायित्व से रहित है। इसलिए शिक्षा के यान्त्रिक हो जाने से डॉक्टर, इंजीनियर जैसे कल-पूर्जों का निर्माण तो हो रहा है लेकिन मानव का निर्माण बाधित हो गया है। शिक्षा को स्वदेशी, भावनात्मक तथा सार्थक बनाने के लिए सबसे पहले कक्षाओं का निर्माण विषयवार हो और विषय के अनुसार कक्षाओं को सजाया जाए। प्रवेश में अध्यापक की भूमिका निर्णायक हो। प्रबंध तंत्र का वर्चस्व कम हो। अध्यापकों पर विद्यार्थी को योग्य बनाने का भार हो।

परीक्षाओं का संचालन एवं नियंत्रण इस प्रकार हो कि विद्यार्थी निर्भय होकर उत्साह से परीक्षा में बैठे। निजी शिक्षण संस्थाओं द्वारा किए जा रहे आर्थिक शोषण पर तो अंकुश लगाना ही चाहिए। शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश एवं नियुक्तियों के संदर्भ में राजनीकि हस्तक्षेप समाप्त होना चाहिए।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

श्री महेन्द्र, रिंकू,
अर्पित बाफना
आमेट-मुम्बई

* भगवान् महावीर ने कहा- 'शस्त्र अनेक प्रकार के हैं किंतु उनमें सबसे बड़ा शस्त्र है भाव।' यहां इसीलिए यू.एन.ओ. के शांति प्रस्तावों में कहा गया कि शस्त्रों का निर्माण आयुध कारखानों में बाद में होता है। पहले उनका निर्माण आदमी के मस्तिष्क में होता है।
* लड़ाई भी रणभूमि में बाद में लड़ी जाती है, पहले आदमी के दिमाग में लड़ी जाती है इसलिए हम पहले दिमाग को दुरुस्त करें। उसे ठीक करें। अगर मानसिक हिंसा से हम विरत रहते हैं तो तनाव और अशांति कभी निकट नहीं आ सकती लेकिन जब तक मानसिक हिंसा से मुक्त नहीं होते, कायिक हिंसा को रोका नहीं जा सकता।
* मस्तिष्कीय परिवर्तन के द्वारा, प्रशिक्षण के द्वारा हम मन को पवित्र बनाएं। जीवन विज्ञान मस्तिष्कीय प्रशिक्षण की विद्या है।

आचार्य महाप्रज्ञ

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

श्री नोरतमल-कुमत बच्छावत

संजय-रेखा बच्छावत

होसपेट-बेंगलोर-चाड़वास

Shree
Hem
Jewellers

Wholesale of
Kolhapuri Beds
Thushi Machine Chains
& Gold Ornaments

Shree
Vardhman
Construction

- आध्यात्मिकता और नैतिकता मनुष्य की आंतरिक आस्था का प्रश्न है। उस आस्था को जगाने के लिए आंतरिक परिवर्तन जरूरी है।

- राष्ट्र-प्रेम, मानवता का प्रेम, संतुलित समाज व्यवस्था और पारिपार्श्विक वातावरण- ये सब उसमें सहयोगी बनते हैं, किंतु आध्यात्मिक और नैतिक विकास का मूल कारण है व्यक्ति का आंतरिक परिवर्तन।

- जब तक उसके प्रति हमारा ध्यान आकर्षित नहीं होगा, हम सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और नैतिक चेतना को जगाने में सफल नहीं हो सकेंगे, राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की शिक्षा की कल्पना पूर्ण नहीं की जा सकेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

श्री उत्तमचंद पगारिया

कोल्हापुर

युवादृष्टि सदस्यता फार्म

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

प्रकाशन : युवादृष्टि

नाम : ....

पता : ....

....

फोन नं. : .... मोबाइल नं. : ....

ई-मेल : ....

सदस्यता शुल्क : सदस्यता शुल्क (पाँच वर्ष) 3100 रूपये (कोरियर द्वारा)

शुल्क भुगतान विवरण : नगद ( ) चेक/डीडी ( )

चेक/ड्राफ्ट संख्या .... दिनांक : ....

बैंक .... शाखा ....

(जमा राशि की रसीद फार्म के साथ संलग्न करें)

दिनांक (हस्ताक्षर)

कृपया यहाँ से काटें

1. सदस्यता फार्म पूर्ण विवरण सहित निम्न पते पर भेजें :

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्, 'युवालोक', पोस्ट लाडनूं-341306, जिला-नागौर (राजस्थान)

दूरभाष : 01581-226114, ई-मेल : abtyp.ladnun@yahoo.in

2. बैंक विवरण (शुल्क जमा करने हेतु) : ओरिएन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, शाखा - लाडनूं

चालू खाता संख्या : 10272010002800

युवादृष्टि

बदले सबकी सृष्टि..

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष में आचार्य श्री महाप्रज्ञ की पुस्तकों पर आधारित अंक प्रकाशित किए जा रहे हैं इसी क्रम में आगामी अंक

तूने दिया
जीवन का तत्त्व
तूने दिया
जीवन का सत्त्व
तूने दिया
अनंत आकाश
तूने दिया
आत्मविश्वास
यदि
आप जानना चाहते हो कैसे
तो पढ़े युवादृष्टि का
अगल अंक

श्रमण महावीर

आमंत्रण–रचनाएँ

ज्ञातव्य है कि परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाप्रज्ञजी जन्मशताब्दी वर्ष गतिमान है। आचार्यश्री ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से समसामयिक समस्याओं के समाधान का प्रयत्न किया। वे मौलिक चिन्तक, कवि, साहित्य सृष्टा और अन्वेषक थे। परमपूज्य आचार्यश्री के साहित्य में उपलब्ध अनमोल विचारों को नये तरीके से जनता तक पहुंचाने हेतु ''युवादृष्टि'' एक सेतु के रूप में प्रस्तुत हो सके, ऐसा अभातेयुप परिवार का संकल्प है। अतः मानवता के मसीहा आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के साहित्यों प्रबुद्ध पाठकों व बुद्धिजीवियों से सविनय निवेदन है कि पूज्यप्रवर के चयनित साहित्यों पर आधारित प्रकाशन में आने वाले युवादृष्टि के अंकों के लिए आप अपने आलेख निम्न दिये गये पते पर प्रेषित कराएं। आलेखन हेतु सुधी लेखकों से हमारी विनम्र अपेक्षा है कि वे चयनित साहित्यों में उपलब्ध किसी अनमोल विचार व संदर्भ को उद्धृत करते हुए सरल एवं स्पष्ट भाषा शैली से उस पर अपनी विवेचना लगभग 500 शब्दों में करें। उद्धृत विचार व संदर्भ के साथ आचार्यप्रवर का नामोल्लेख आलेख में करना अधिक प्रासंगिक प्रतीत होगा। किसी भी संदर्भित शोधपूर्ण निबंधों को प्राथमिकता दी जा सकेगी तथा उसके लिए कुछ पृष्ठ भी आरक्षित हो सकेंगे। रचनाकार अपनी गद्य, पद्य रचना फुलस्केप पेपर पर एक तरफ उचित मार्जिन रखकर प्रेषित कराएं।

''विशेष–आकर्षण''

- स्वास्थ्य विशेष
- बच्चों की दुनिया
- कॅरियर विशेष
- अब तो जागें
- प्रबंधन–सूत्र
- आज की बात

आगामी अंकों के संभावित विषय

विषय	रचना भेजने की तिथि
मैं हूँ अपने भाग्य का निर्माता	15 मार्च 2020
संबोधि	15 अप्रैल 2020
आया सावन झूम के	15 मई 2020

रचनाएँ भेजने का पता

Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad
Yuvalok
Post Box No. 16
Ladnun-341306 (Raj.)
Mob. 8290626767
e-mail : abtypyd@gmail.com

नोटः किसी भी प्रकार की पूछताछ व शिकायत के लिए सम्पर्क सूत्र :-
मो. : 9822274374 मो. :9964222652 E-mail: sugestion.abtyp@gmail.com
पता : अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002

B. C. JAIN (BHALAWAT), FCA, ACS, ICWA
Director

SUNRISE
HOUSING CONSTRUCTIONS LTD.

Sunbeam Chambers, Ground Floor, New Marine Lines,
Opp. Liberty Cinema, Mumbai 400 020 India
Tel. No.: 022-22096000/ 1/ 4 Fax: 022-22095000
Mobile: 09821117813 Email: cabcjain@gmail.com

D.P. Regd. No. DL (c)-01/1271/2018-20
Regd. No. R.N.I. 25988/73
Date of Publishing : 25th Feb. 2020
Posted at New Delhi PSO Dt. 01-02 Every Month

MANGAL
CREDIT & FINCORP LIMITED

Shree
Mangal
ABHUSHAN PVT. LTD.
Mumbai, Rajkot and
Krizz Casting Jewellery
Showroom :
301, Chintamani Accade,
Zaveri Bazaar, Mumbai
Cont. : 022-2345 4300

Shree Radhey
Mangal
GOLD CHAIN PVT. LTD.
Specialized Gold Chain
with variety and sizes
Showroom :
202, Chintamani Accade,
Zaveri Bazar, Mumbai.
Cont. 022-2345 1872

Shree Ratna
Mangal
JEWELS PVT. LTD.
Exclucive designer
Mangalsutra
Showroom :
302, Chintamani Accade,
Zaveri Bazar, Mumbai.
Cont. 022-2344 7373

Shree
Mangal
JEWELS PVT. LTD.
Exclusive Collection of
Designer Bangles
Showroom :
201, Chintamani Accade,
Zaveri Bazaar, Mumbai.
Cont. : 022-2345 5001

Mangal
ROYAL JEWELS PVT. LTD.
Exclusive Gold & Diamond
Jewellery Showroom
Showroom :
Agarwal Market,
Vile Parle (East), Mumbai.
Cont. : 022-26187089

SwarnBhavya
Mangal
JEWELS PVT. LTD.
Exclusive Collection of
Italian Jewellery
Showroom :
68/72, Ganpati Bhawan,
Dhanji Street, Mumbai.
Cont. : 022-3352 8554.

Shri SohanlalJi, Meghraj, Ajit Dhakad (Sisoda)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- विमल कटारिया द्वारा जे.के. ऑफसेट, 17, डी.एस.आई.डी.सी. रोहतक रोड, नांगलोई, दिल्ली से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2 से प्रकाशित। सम्पादक-विमल कटारिया